भारत के भुगतान संतुलन में अदृश्य मदें: सेवा में व्यापार, विप्रेषण तथा आय का विश्लेषण *

I. प्रस्तावना

अदृश्य मद खाता भारत के भुगतान संतुलन का एक भाग है जिसमें सेवाओं का अंतरराष्ट्रीय व्यापार, वित्तीय आस्तियों, श्रमिक तथा संपत्ति से प्राप्त आय तथा दूसरे देशों से प्राप्त मुख्यतः श्रमिक का विप्रेषण शामिल होता है। हाल के वर्षों में चालू खाते में भारत के भुगतान संतुलन में दो बातें मुख्य रूप से देखने में आई हैं अर्थात् (क) व्यापार घाटा अनवरत रूप से अधिक रहना, तथा (ख) अदृश्य मद अधिशेष में उछाल। अदृश्य मदों के निरंतर बढ़ते अधिशेष ने बढ़ते व्यापार घाटे के लिए बचाव व्यवस्था के रूप में कार्य करने के साथ-साथ बाहरी भुगतान स्थिति संबंधी जोखिम को कम करने में सहायता की है। अदृश्य मदों के महत्व को समझते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक इन क्षेत्रों से संबंधित गतिविधियों की जानकारी दो स्तरों पर प्रकाशित करता है अर्थात (i) अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के विशेष आंकड़ा प्रसार मानक (एसडीडीएस) के पालनार्थ भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट पर तिमाही आधार पर तथा बाद में रिज़र्व बैंक के मासिक बुलेटिन में मुख्य शीर्षों के साथ मानक प्रस्तुतीकरण, और (ii) भारतीय रिज़र्व बैंक के मासिक बुलेटिन में "भारत के भुगतान संतुलन में अदृश्य मदें" शीर्षक वार्षिक लेख में मुख्य शीर्षों के विभाजन दर्शाते हुए विस्तृत प्रस्तुतीकरण।[1]

इस लेख में भारत के व्यापार में 2005-06 (संशोधित) एवं 2006-07 (आंशिक संशोधित) की अवधि के साथ-साथ 1999-2000 से समय श्रृंखला डाटा के बारे में भी अदृश्य मदों से संबंधित अलग-अलग सूचना उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। इस लेख का गठन इस प्रकार है। भाग II में सकल स्तर

* अंतरराष्ट्रीय वित्त प्रभाग, आर्थिक विश्लेषण और नीति विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक में तैयार किया गया।

[1] लेख का पिछला भाग भारतीय रिज़र्व बैंक बुलेटिन, नवंबर 2006 में प्रकाशित किया गया था। इसमें 1999-2000 से 2005-06 तक के आंकड़े शामिल किए गए थे। 1997-98 से 1999-2000 तक के ऐसे आंकड़ों का प्रकाशन भारतीय रिज़र्व बैंक बुलेटिन जनवरी 2001 में और 1989-90 से 1996-97 तक के आंकड़ों का प्रकाशन भारतीय रिज़र्व बैंक बुलेटिन के अप्रैल 1999 अंक में किया गया था। 1956-57 से 1989-90 तक के आंकड़ों का प्रकाशन "मानोग्राफ आन इंडियाज़ बैलेंस ऑफ पेमेंटस" में जुलाई 1993 में किया गया था।

पर अदृश्य मदों के परिमाण तथा प्रवृत्तियों को प्रस्तुत किया गया है। अदृश्यों मदों के विभिन्न घटकों को विश्लेषण भाग III में प्रस्तुत किया गया है। भाग IV में सेवा एवं विप्रेषण से संबंधित नीतिगत पहलों का उल्लेख किया गया है। भाग V में समापन विचार किए गए ।

II. अदृश्य मदों की अवधारणाएं, इनकी मात्रा और हालिया प्रवृत्तियां

भुगतान संतुलन मानक प्रस्तुतीकरण के अंतर्गत अदृश्य मदें चालू खाते का अंग होती हैं और सेवा, अंतरण तथा आय के रूप में इनके तीन शीर्ष होते हैं (बाक्स-1)। इन तीनों मुख्य शीर्षों को बाद में छोटे-छोटे शीर्षों में बांटा गया है (विवरण 1 से 6)। इन छोटे - छोटे शीर्षों के परिभाषात्मक पहलुओं को बाक्स 2 में बताया गया है। 1980 के दशक के उत्तरार्ध में कमी के पश्चात, 1990 के दशक में अदृश्य मदों के अधिशेष में पुनः इज़ाफा होने से 1990 के दशक से चालू खाता घाटे को सीमित दायरे में रखना संभव हुआ, यद्यपि बीच में कुछेक वर्ष अधिशेष भी था (चार्ट 1)। इस तरह, अदृश्य मदों के अधिशेष में हो रही अनवरत वृद्धि ने बाह्य भुगतान स्थिति के जोखिम को काफी कम कर दिया। इसके अतिरिक्त, 2001-02 से 2003-04 की अवधि में चालू खाता अधिशेष के साथ चालू खाता घाटा सीमित स्तर पर बना रहा। साथ ही, पर्याप्त रूप से पूंजी अंतर्वाह भी बना रहा जिसके कारण आम जनता तथा कारपोरेट दोनों ही के लिए चालू तथा पूंजी खाता लेनदेनों पर भुगतान प्रतिबंधों को कम करना संभव हुआ।

भारत के अदृश्य मद खाते की एक और महत्वपूर्ण बात यह रही कि 2002-03 से विशेष रूप से सकल प्राप्तियों और भुगतान में तेजी आई है। अदृश्य प्राप्तियों की मद में यह वृद्धि मुख्यतः साफ्टवेयर तथा सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) सेवाओं तथा कारोबारी सेवाओं के निर्यात और समुद्रपारीय भारतीयों के विप्रेषण के कारण हुई। अदृश्य मद भुगतान में वृद्धि के मुख्य कारण थे- बाहरी ऋण के ब्याज भुगतान, विदेशी निवेश पर दिया जाने वाला लाभांश/लाभ, प्रौद्योगिकी संबंधी और कारोबारी सेवाओं की बढ़ती मांग के फलस्वरूप इनमें किया जाने वाला निवेश तथा भुगतान (सारणी 1)।

चार्ट 1 : भारत के चालू खाता और अदृश्य मदों की प्रवृत्तियां

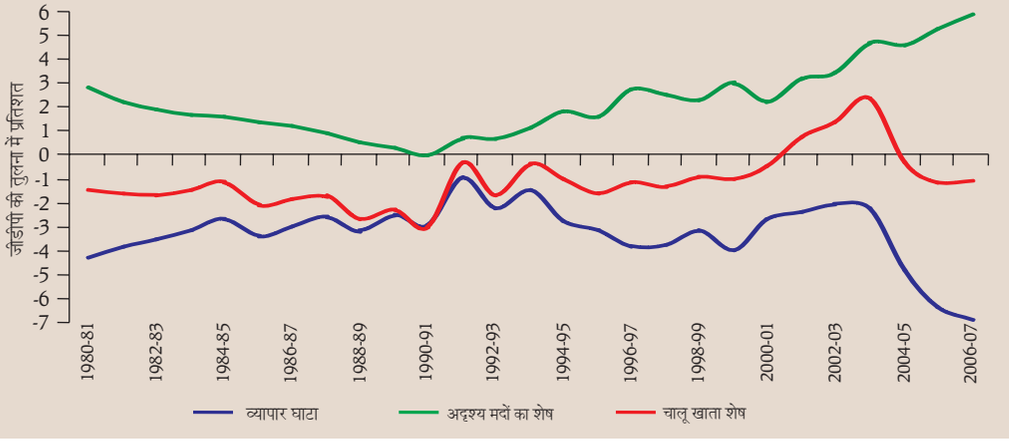

बाक्स 1 : भारत के अदृश्य मदों का समेकन तथा प्रसार

भारत के अदृश्य मदों के ब्योरे भारतीय भुगतान संतुलन का हिस्सा है और इन्हें दो चरणों में जारी किया जाता है, अर्थात् (i) मुख्य शीर्षों सहित मानक प्रस्तुतीकरण, और (ii) मुख्य शीर्षों के अलग-अलग हिस्सों को दिखाते हुए विस्तृत प्रस्तुतीकरण। पहले चरण में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) के विशेष आंकड़ा प्रसार मानक (एसडीडीएस) को पूरा करने के लिए भुगतान संतुलन के भाग के रूप में तिमाही आधार पर अदृश्य मदों के महत्वपूर्ण घटकों को जारी किया जाता है। ये तिमाही ब्योरे भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट पर जारी किए जाते हैं तथा इन्हें भारतीय रिज़र्व बैंक बुलेटिन में भी प्रकाशित किया जाता है। पहले चरण में इनका कवरेज इन मुख्य शीर्षों तक सीमित रहता है : सेवाएं (यात्रा, यातायात, बीमा, सरकारी तथा वे सेवाएं जो अन्यत्र शामिल नहीं की गई हैं यथा साफ्टवेयर सेवाएं, कारोबारी सेवाएं, वित्तीय सेवाएं एवं संचार सेवाएं), अंतरण (निजी एवं आधिकारिक अंतरण) तथा आय (निवेश आय तथा कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति)। दूसरे चरण में, जब डाटा पूरी तरह उपलब्ध होने लगता है तथा अधिक ब्योरे उपलब्ध होते हैं तब अदृश्यों मदों के अलग-अलग ब्योरे समेकित किए जाते हैं एवं इन्हें वार्षिक आधार पर उपलब्ध कराया जाता है। ये अलग-अलग आंकड़े भारतीय रिज़र्व बैंक बुलेटिन में "भारत के भुगतान संतुलन में अदृश्य मदें" शीर्ष से प्रकाशित किए जाते हैं।

अदृश्य मद संबंधी ब्योरे भारतीय भुगतान संतुलन के रिकार्ड से लिए जाते हैं तथा भुगतान संतुलन के ब्योरे अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के भुगतान मैनुअल के पांचवें संस्करण (बीपीएम 5), 1993 के दिशानिर्देशों के अनुसार संकलित किए जाते हैं, पर इनमें भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप कुछ बदलाव भी किए गए हैं। भुगतान संतुलन मैनुअल में भुगतान संतुलन को एक ऐसे सांख्यिकीय विवरण के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें शेष विश्व के साथ निर्धारित समयावधि में किसी अर्थव्यवस्था के आर्थिक लेनदेनों का सार सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जाता है। निवासी और अनिवासियों के बीच होनेवाले लेनदेनों में माल, सेवा तथा आय सम्मिलित है, जिसमें शेष विश्व के प्रति वित्तीय दावे तथा देयताएं शामिल होती हैं; और वे जिन्हें अंतरण के रूप में वर्गीकृत किया गया होता है और इसमें एकतरफा शेष लेनदेनों के संतुलन के लिए प्रविष्टियों का समंजन भी शामिल होता है।

सेवा क्षेत्र के बढ़ते महत्व को समझते हुए और विस्तारित भुगतान संतुलन के समेकन की आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से रिज़र्व बैंक ने सेवाओं के अंतरराष्ट्रीय कारोबार की सांख्यिकी पर गठित तकनीकी समिति की रिपोर्ट के आधार पर एक व्यवस्था शुरू की। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट 2002 में प्रस्तुत की थी। इस व्यवस्था के अनुसार गेट्स फ्रेमवर्क के अधीन सेवाओं के अंतरराष्ट्रीय कारोबार में चल रहे वार्तालाप के मद्देनज़र भारत में सेवाओं के कारोबार से संबंधित व्यापक सूचना एकत्र करने में रिज़र्व बैंक अग्रणी भूमिका निभा रहा है। नई रिपोर्टिंग व्यवस्था के अंतर्गत 2004-05 में कुछ नए उद्देश्य कोड शुरू किए गए ताकि उभरती कारोबारी सेवाओं के लिए अलग-अलग डाटा एकत्र किया जा सके। इन सेवाओं में शामिल हैं - मर्चेंटिंग सेवाएं, कारोबार संबंधी सेवाएं, परिचालन पट्टा संबंधी सेवाएं, विधिक सेवाएं, लेखा सेवाएं, कारोबार एवं प्रबंधन सेवाएं, विज्ञापन सेवाएं, अनुसंधान एवं विकासात्मक सेवाएं, वास्तुविद एवं इंजीनियरिंग सेवाएं, कृषि सेवाएं, कार्यालय रखरखाव सेवाएं, पर्यावरण संबंधी सेवाएं, तथा वैयक्तिक एवं सांस्कृतिक सेवाएं। इनके बारे में भारतीय रिज़र्व बैंक बुलेटिन के नवंबर 2006 अंक में छपे पिछले आलेख में जानकारी दी गई है।

2005-06 तथा 2006-07 के वित्तीय वर्षों के आंकड़ो में किए गए संशोधन में, अन्य बातों के साथ-साथ, कारोबारी सेवाओं तथा साफ्टवेयर सेवाओं के आंकड़ों के संभाव्य अतिव्याप्ति को भी ध्यान में रखा गया है। तदनुसार, प्राधिकृत व्यापारियों (एडी) द्वारा रिपोर्ट किए गए आंकड़ों की समीक्षा की गई और प्राप्त फीडबैक के आधार पर कारोबारी सेवाओं के विभिन्न घटकों में संशोधन किया गया।

बाक्स : 2 अदृश्य मदों के घटकों के पारिभाषिक पहलू के ब्यौरे

मद	विवरण
1. सेवाएं	
(i) यात्रा	"यात्रा" में प्राप्ति पक्ष में विदेशी पर्यटकों द्वारा भारत में किए गए सभी व्यय तथा भुगतान पक्ष में भारतीय पर्यटकों द्वारा विदेश में किए गए सभी व्यय शामिल हैं। यात्रा प्राप्ति मुख्यतः एक निश्चित समयावधि में भारत में आए विदेशी पर्यटकों पर निर्भर करती है।
(ii) यातायात	"यातायात" में माल ढुलाई तथा व्यक्तियों को एक स्थान से दूसरे स्थान लाने-ले जाने के साथ-साथ पण्य व्यापार के संबंध में की जाने वाली संवितरण सेवाओं (बंदरगाह प्रभार, बंकर ईंधन, जहाजी कुली, अनुतट यात्रा, वेयरहाउसिंग) की प्राप्ति तथा भुगतान के रिकॉर्ड को शामिल किया जाता है।
(iii) बीमा	'बीमा' में निर्यात/आयात बीमा, जीवन बीमा तथा गैर-जीवन बीमा पालिसी पर प्रीमियम तथा विदेशी बीमा कंपनियों से पुनः बीमा प्रीमियम शामिल हैं।
(iv) सरकार अन्यत्र शामिल नहीं (जीएन आइई)	'सरकार अन्यत्र शामिल नहीं (जीएनआईई)' विदेशी दूतावासों के रखरखाव, राजनयिक मिशनों, तथा अंतरराष्ट्रीय/क्षेत्रीय संस्थानों के लिए प्राप्त विप्रेषणों का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि विदेश में दूतावासों तथा राजनयिक मिशनों के रखरखाव के लिए भेजा जानेवाला विप्रेषण भुगतान में आता है।
(v) विविध सेवाएं	"विविध सेवाएं" में संचार सेवाएं, विनिर्माण सेवाएं, वित्तीय सेवाएं, साफ्टवेयर सेवाएं, समाचार एजेंसी सेवाएं, रायल्टी, कापीराइट तथा लाइसेंस शुल्क, प्रबंधन सेवाएं तथा कारोबारी सेवाएं शामिल हैं । कारोबारी सेवाओं में मर्चेंटिंग सेवाएं, व्यापार संबंधी सेवाएं, परिचालन पट्टा सेवाएं, विधिक सेवाएं, लेखा सेवाएं, व्यापार एवं प्रबंधन सेवाएं, विज्ञापन सेवाएं, अनुसंधान और विकास सेवाएं, वास्तुविद एवं इंजीनियरिंग सेवाएं, कृषि सेवाएं, कार्यालय रखरखाव सेवाएं, पर्यावरण संबंधी सेवाएं तथा वैयक्तिक एवं सांस्कृतिक सेवाएं शामिल हैं।
2. निवेश आय	'निवेश आय' पूंजीगत लेनदेनों (ऋण एवं ऋणेतर दोनों) की चुकौती का प्रतिनिधित्व करती है। पूंजीगत लेनदेनों की चुकौती के लिए ये लेनदेन ब्याज, लाभांश, आय तथा अन्य के रूप में होते हैं। ब्याज भुगतान जहां ऋण देयताओं की चुकौती का प्रतिनिधित्व करते हैं वहीं लाभांश तथा लाभ भुगतान ऋणेतर देयताओं (विदेशी प्रत्यक्ष निवेश तथा पोर्टफोलियो निवेश) को प्रदर्शित करते हैं। निवेश आय भुगतान भारत की बाह्य देयताओं के अनुसार होते हैं जबकि निवेश आय प्राप्ति विदेशी मुद्रा रिज़र्व सहित भारत की बाहरी आस्तियों से संबंधित हैं । बीपीएम5 के अनुसरण में 1997-98 से "कर्मचारियों का वेतन" "आय" शीर्ष में दिखाया जा रहा है।
3. अंतरण	'अंतरण' एकतरफा लेनदेन का प्रतिनिधित्व करते हैं अर्थात ऐसे लेनदेन जिनमें प्रतिकर नहीं देना होता है जैसे अनुदान, उपहार तथा पारिवारिक खर्चे हेतु प्रवासियों द्वारा विप्रेषण के माध्यम से भेजे जाने वाले अंतरण, प्रवासियों की निवास की स्थिति में परिवर्तन होने से उनकी बचत तथा वित्तीय अंतरण व वास्तविक संसाधनों के प्रत्यावर्तन। आधिकारिक अंतरण प्राप्ति में अनुदान, दान तथा द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय संस्थाओं से सरकार को प्राप्त अन्य सहायता शामिल की जाती है। इसी तरह, भारत सरकार द्वारा अन्य देशों को किए जाने वाले अंतरण आधिकारिक अंतरण भुगतान में शामिल किए जाते हैं।

सारणी 1 : भारत में अदृश्य मदों की प्राप्तियों एवं भुगतान की प्रवृत्तियां

वर्ष	अदृश्य मद संबंधी प्राप्ति		अदृश्य मद संबंधी भुगतान		अदृश्य मद, निवल
	राशि (अमरीकी डालर में)	वृद्धि %	राशि (अमरीकी डालर में)	वृद्धि %	राशि (अमरीकी डालर में)
1	2	3	4	5	6
1990-91	7,464	-0.5	7,706	12.0	-242
1995-96	17,664	13.6	12,217	23.7	5,447
1999-00	30,312	17.6	17,169	3.7	13,143
2000-01	32,267	6.4	22,473	30.9	9,794
2001-02	36,737	13.9	21,763	-3.2	14,974
2002-03	41,925	14.1	24,890	14.4	17,035
2003-04	53,508	27.6	25,707	3.3	27,801
2004-05	69,533	29.9	38,301	49.0	31,232
2005-06	89,687	29.0	47,685	24.5	42,002
2006-07	115,074	28.3	61,669	29.3	53,405

2006-07 में सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में अदृश्य मद संबंधी प्राप्तियां एवं भुगतान क्रमशः 12.5 प्रतिशत तथा 6.7 प्रतिशत के स्तर पर रहे। इस स्तर पर, अदृश्य मदों से प्राप्ति और भुगतान चालू खाते की प्राप्ति और भुगतान के क्रमशः 47 प्रतिशत तथा 24 प्रतिशत के स्तर पर बैठता है (चार्ट 2)। 2000-01 से 2006-07 की अवधि में औसतन अदृश्य मद प्राप्तियां चालू खाता प्राप्तियों के 45 प्रतिशत के आसपास थी जबकि अदृश्य मद भुगतान चालू खाता भुगतान के लगभग 26 प्रतिशत के आसपास था।

अदृश्य प्राप्तियों का विघटन यह दर्शाता है कि सेवा निर्यात के चलते अदृश्य प्राप्तियों में वृद्धि हुई है। 1990-91 में सेवा-सकल घरेलू उत्पाद अनुपात 1.4 प्रतिशत था जो 2006-07 में बढ़कर 8.3 प्रतिशत हो गया। इस स्तर पर, अदृश्य मदों से प्राप्तियों में सेवाओं का हिस्सा दो तिहाई था (सारणी 2)।

निवल अदृश्य मद अधिशेष (अदृश्य मद प्राप्ति में से भुगतान घटाकर) इस दशक के शुरू के 2.1 प्रतिशत और 2005-06 के 5.2 प्रतिशत से बढ़कर 2006-07 में सकल घरेलू उत्पाद का 5.8 प्रतिशत हो गया। 2006-

चार्ट 2: अदृश्य मदों की प्राप्तियों और भुगतान की प्रवृत्तियां

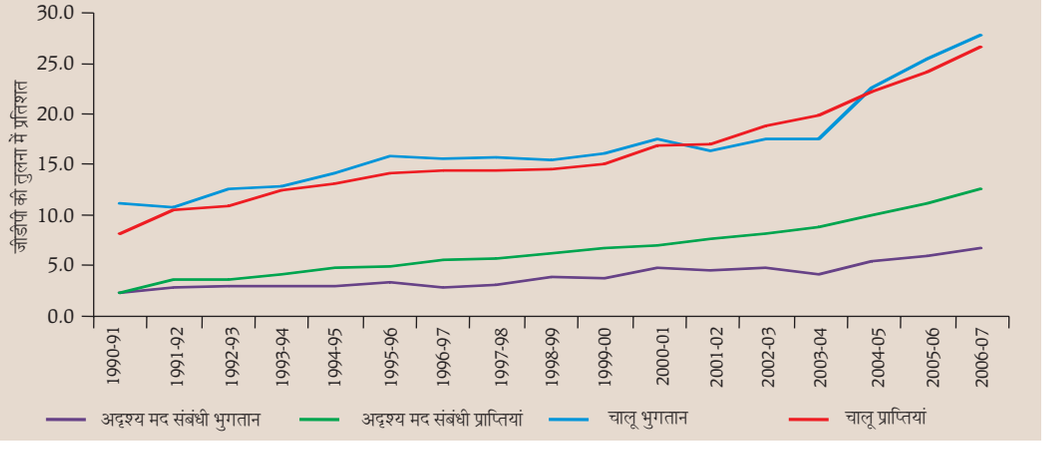

सारणी 2 : जीडीपी के अनुसार अदृश्य मद खाते के प्रमुख घटक

(जीडीपी की तुलना में प्रतिशत)

वर्ष	प्राप्तियां				भुगतान				निवल			
	सेवाएं	अंतरण	आय	कुल	सेवाएं	अंतरण	आय	कुल	सेवाएं	अंतरण	आय	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1990-91	1.4	0.8	0.1	2.3	1.1	0.0	1.3	2.4	0.3	0.8	-1.2	-0.1
1995-96	2.1	2.5	0.4	5.0	2.1	0.0	1.3	3.4	0.0	2.5	-0.9	1.6
1999-00	3.5	2.8	0.4	6.7	2.6	0.0	1.2	3.8	0.9	2.8	-0.8	2.9
2000-01	3.5	2.9	0.6	7.0	3.2	0.0	1.7	4.9	0.3	2.9	-1.1	2.1
2001-02	3.6	3.4	0.7	7.7	2.9	0.1	1.6	4.6	0.7	3.3	-0.9	3.1
2002-03	4.1	3.5	0.7	8.3	3.4	0.2	1.4	5.0	0.7	3.3	-0.7	3.3
2003-04	4.5	3.8	0.6	8.9	2.8	0.1	1.4	4.3	1.7	3.7	-0.8	4.6
2004-05	6.2	3.1	0.7	10.0	4.0	0.1	1.5	5.6	2.2	3.0	-0.8	4.4
2005-06	7.1	3.2	0.8	11.1	4.3	0.1	1.5	5.9	2.8	3.1	-0.7	5.2
2006-07	8.3	3.2	1.0	12.5	4.8	0.2	1.7	6.7	3.5	3.0	-0.7	5.8

07 में अदृश्य मद के तहत निवल अधिशेष ने व्यापार घाटे के 85 प्रतिशत भाग का वित्तपोषण किया (सारणी 3)।

भारत के निर्यात स्तर में आए परिवर्तन के अलावा, इसके सेवा निर्यात में उल्लेखनीय बात यह रही है कि सेवा निर्यात में उतार-चढ़ाव कम रहा है, जिससे चालू प्राप्तियों में स्थायित्व आया है। सेवा निर्यात का उल्लेखनीय पहलू यह भी है कि 2006-07 में 31.3 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर को छूकर भारत साफ्टवेयर निर्यात के बड़े देश के रूप में उभर रहा है। वैश्विक मंदी के बावजूद आईटी क्षेत्र में हाल के वर्षों में 30 प्रतिशत की दर से विस्तार हो रहा है। एक बार फिर, 2006-07 में भारत को 29.0 बिलियन डालर का कामगारों का विप्रेषण प्राप्त हुआ। इस तरह भारत ने विप्रेषण प्राप्त करने वाले प्रमुख देशों में अपना स्थान बनाए रखा और इस प्रकार ऐसे अंतर्वाह में स्थायित्व था ।1990 के दशक से विप्रेषण में हुई यह सुदृढ़ वृद्धि ढांचागत सुधारों के कारण हुई। इन सुधारों में बाजार आधारित विनिमय दर और चालू खाता परिवर्तनीयता शामिल है। इसके साथ-साथ श्रमिक प्रवासन तरीके में भी बदलाव आया है। अब दक्ष श्रेणी के श्रमिकों की संख्या बढ़ रही है (चार्ट 3)।

अद्यतन प्रवृत्तियां

अदृश्य मद की प्राप्ति में अप्रैल - सितंबर 2007 में गिरावट आई और यह अप्रैल-सितंबर 2006 के 31.0

सारणी 3 : व्यापार घाटे के वित्तीयन सहित अदृश्य मदों के चुनिंदा संकेतक

(प्रतिशत)

वर्ष	निवल अदृश्य मदें / व्यापार घाटा	अदृश्य मदों संबंधी प्राप्तियां / चालू प्राप्तियां	अदृश्य मदों संबंधी भुगतान / चालू भुगतान
1	2	3	4
1990-91	-2.6	28.8	21.6
1995-96	48.0	35.3	21.9
1999-00	73.7	44.7	23.7
2000-01	78.6	41.5	28.0
2001-02	129.4	45.1	27.9
2002-03	159.4	43.8	27.9
2003-04	202.7	44.7	24.3
2004-05	92.7	44.9	24.4
2005-06	80.9	46.0	23.3
2006-07	84.5	47.3	24.4

चार्ट 3 : भारत की अदृश्य मदों संबंधी प्राप्तियां : प्रमुख घटक

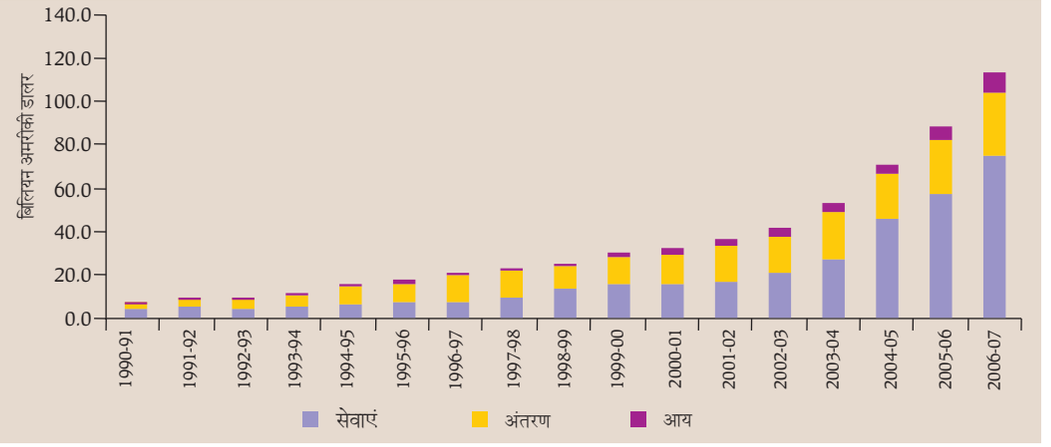

प्रतिशत से गिरकर 23.4 प्रतिशत रह गई। ऐसा मुख्यतः साफ्टवेयर तथा कारोबारी सेवाओं के निर्यात में आई कमी के कारण हुआ (सारणी 4)। अदृश्य भुगतान के मुख्य घटक हैं - यात्रा भुगतान, कारोबारी सेवा भुगतान जैसे कारोबारी तथा प्रबंधन परामर्श से संबंधित भुगतान, इंजीनियरिंग तथा अन्य तकनीकी सेवाएं तथा ब्याज भुगतान, लाभांश तथा लाभ भुगतान। अप्रैल-सितंबर 2007 में अदृश्य मद संबंधी भुगतान में 13.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि अप्रैल-सितंबर 2006 में यह 31.2 प्रतिशत थी।

III. अदृश्य मदों के संघटन

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है, अदृश्य मद में सेवाओं में अंतरराष्ट्रीय व्यापार, वित्तीय आस्तियाँ, श्रम तथा संपत्ति से आय तथा मुख्यतः विदेशों से श्रमिकों

सारणी 4 : अदृश्य मद संबंधी सकल प्राप्तियां एवं भुगतान : अद्यतन प्रवृत्तियां

(मिलियन अमरीकी डालर)

मदें	अदृश्य मद संबंधी प्राप्तियां				अदृश्य मद संबंधी भुगतान			
	2005-06	2006-07	2006-07	2007-08	2005-06	2006-07	2006-07	2007-08
	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-सितं.	अप्रैल-सितं.	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-सितं.	अप्रैल-सितं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. यात्रा	7,853	9,123	3,504	4,336	6,638	6,685	3,300	3,960
2. परिवहन	6,325	8,050	3,725	4,280	8,337	8,068	3,975	5,594
3. बीमा	1,062	1,202	553	788	1,116	642	283	475
4. सरकार अन्यत्र शामिल नहीं	314	250	101	167	529	403	201	245
5. अंतरण	25,620	29,589	12,923	19,295	933	1,421	665	852
6. आय	6,408	9,304	3,954	6,431	12,263	15,877	7,275	7,875
निवेश आय	6,229	8,908	3,816	6,142	11,491	14,926	6,851	7,383
कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति	179	396	138	289	772	951	424	492
7. विविध	42,105	57,556	25,139	26,295	17,869	28,573	10,766	10,903
जिसमें से								
सॉफ्टवेयर	23,600	31,300	14,160	16,317	1,338	2,267	820	1,220
कुल (1 से 7)	**89,687**	**115,074**	**49,899**	**61,592**	**47,685**	**61,669**	**26,465**	**29,904**

से प्राप्त विप्रेषण शामिल होते हैं । अदृश्य मद प्राप्तियों में मुख्यतः साफ्टवेयर विप्रेषण सेवाओं, कारोबारी सेवाओं तथा निजी अंतरणों का बाहुल्य था । अदृश्य मद भुगतानों में मुख्यतः बाह्य ऋण पर ब्याज, विदेशी निवेशों पर दिया जाने वाला लाभांश/लाभ तथा तकनीकी और कारोबार सेवाओं की मांग से संबंधित भुगतान थे, ऐसी सेवाओं की मांग बढ़ रही है। सेवाओं में व्यापार निजी अंतरण तथा आय संबंधी ब्योरे नीचे दिए गए हैं।

III.1 सेवाओं में व्यापार

सेवाओं के व्यापार में मुख्यतः साफ्टवेयर सेवाओं तथा कारोबार सेवाओं का बाहुल्य था । सेवा निर्यात का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि सेवा निर्यात में उभर रहे नए अवसरों के मद्देनज़र इसमें संरचनागत अंतरण आया है। परंपरागत सेवाएं जहां पिछड़ रही हैं वहीं उच्च दक्षतापूर्ण एवं प्रौद्योगिकी प्राधान्य वाली नई सेवाएं महत्व हासिल करती जा रही हैं (सारणी 5)। इन सकारात्मक गतिविधियों के कारण एवं सेवा निर्यात में आए अनवरत उछाल के कारण भारत महत्वपूर्ण सेवा निर्यातक के रूप में उभरा है। साफ्टवेयर सेवाओं तथा कारोबार एवं व्यावसायिक सेवाओं के निर्यात में हो रही जबरदस्त वृद्धि के कारण हाल के वर्षों में सेवा क्षेत्र निर्यात में अग्रणी बना रहा । सेवा निर्यात में कारोबारी सेवाओं का आधिपत्य भारतीय श्रमिकों की उच्च दक्षता को दर्शाता है। हाल के वर्षों में अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की रुचि भारत में पुनः बढ़ रही है।

कई सेवाओं के निर्यात में हो रहे तुलनात्मक लाभ के कारण आई सकारात्मक गतिविधियों को प्रतिबिंबित करते हुए 2006 में भारत विश्व का 11वां सबसे बड़ा निर्यातक देश बना । 1990 के 0.6 प्रतिशत की तुलना में अब बाजार में इसका हिस्सा बढ़कर 2.5 प्रतिशत हो गया है (सारणी 6)।

III. 1.1 साफ्टवेयर सेवाएं

2006-07 में साफ्टवेयर तथा आईटी समर्थित सेवाओं का निर्यात 31.3 बिलियन अमरीकी डालर तक

सारणी 5 : भारत के सेवा निर्यात (प्राप्तियों) की संरचना

(प्रतिशत)

वर्ष	यात्रा	परिवहन	बीमा	जीएनआइई	साफ्टवेयर सेवाएं	गैर साफ्टवेयर विविध सेवाएं *	कुल सेवाएं
1	2	3	4	5	6	7	8
1990-91	32.0	21.6	2.4	0.3	-	43.6	100.0
1995-96	36.9	27.4	2.4	0.2	-	33.1	100.0
2000-01	21.5	12.6	1.7	4.0	39.0	21.3	100.0
2001-02	18.3	12.6	1.7	3.0	44.1	20.3	100.0
2002-03	16.0	12.2	1.8	1.4	46.2	22.4	100.0
2003-04	18.7	11.9	1.6	0.9	47.6	19.2	100.0
2004-05	15.4	10.8	2.0	0.9	40.9	29.9	100.0
2005-06	13.6	11.0	1.8	0.5	40.9	32.1	100.0
2006-07	12.0	10.6	1.6	0.3	41.1	34.5	100.0

जीएनआइई : सरकार अन्यत्र शामिल नहीं ।
* कारोबार और पेशेवर सेवाएं शामिल हैं ।

सारणी 6: शीर्ष सेवा निर्यात में भारत की तुलनात्मक स्थिति - 2006

क्रम सं.	देश	राशि (बिलियन अमरीकी डालर)	अंश (%)
1	2	3	4
1	अमरीका	418.8	14.9
2	ब्रिटेन	229.7	8.2
3	ज़र्मनी	173.1	6.1
4	फ्रांस	118.5	4.2
5	जापान	117.3	4.2
6	स्पेन	106.3	3.8
7	इटली	98.6	3.5
8	चीन	92.0	3.3
9	नीदरलैण्ड	84.8	3.0
10	हांगकांग	72.7	2.6
11	**भारत**	**71.2**	**2.5**
12	आयरलैण्ड	69.2	2.5
13	बेल्जियम	59.9	2.1

स्रोत : भुगतान संतुलन सांख्यिकी वर्ष बुक 2007, आइएमएफ ।

पहुंच गया (सारणी 7)। बढ़ते हुए प्रतिस्पर्धी दबावों को दरकिनार करते हुए, कम परिचालन खर्च, उत्पादों एवं सेवाओं की उच्च गुणवत्ता तथा कुशल मानव शक्ति की सहज उपलब्धता के कारण भारत इन सेवाओं का आकर्षक स्रोत बना रहा। इसके अलावा, उत्तरी अमेरिका तथा यूरोप के साथ पड़ने वाले समय अंतराल से भी भारतीय कंपनियों को फायदा हुआ है। वे अपने अंतरराष्ट्रीय परिचालन तथा ग्राहक सेवा के कार्यों को 24 घंटे अंजाम दे सकते हैं (बाक्स 3)। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के मद्देनज़र भारतीय कंपनियों ने आईटी परामर्श तथा सिस्टम इंटीग्रेशन, हार्डवेयर सपोर्ट तथा इंस्टालेशन एवं प्रोसेसिंग सेवाओं जैसे अनदुहे क्षेत्रों की खोज के लिए वैल्यू चेन शुरू की है। ग्राहकों का विश्वास बनाए रखने के लिए सुरक्षा संबंधी चिंताओं को भी समझा गया है । वैश्विक स्तर पर भारत कंप्यूटर तथा सूचना सेवाओं का प्रमुख निर्यातक बना रहा (सारणी 8)।

III.1.2 कारोबारी और व्यावसायिक सेवाएं

हाल के वर्षों, में अदृश्य मदों से प्राप्त राशि में बढ़ोतरी का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू गैर-सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात में वृद्धि होना है जो अंशतः कारोबारी और व्यावसायिक सेवाओं के निर्यात में अंतर्निहित गतिशीलता का द्योतक है (सारणी 9)। कारोबारी सेवाओं की श्रेणी में पण्य सेवाएं, कारोबार संबंधी सेवाएं, बिना परिचालक क्रू के परिचालन लीजिंग सेवाएं, चार्टर किराया, विधिक सेवाएं, लेखांकन, लेखा परीक्षा, बही-खाता प्रणाली और कर परामर्शी सेवाएं, विज्ञापन, व्यापार मेला, बाजार

सारणी 7 : भारत की सॉफ्टवेयर सेवाओं का निर्यात

(मिलियन अमरीकी डालर)

वर्ष	आइटी सेवा निर्यात	आइटीईएस-बीपीओ निर्यात	कुल सॉफ्टवेयर सेवा निर्यात
1	2	3	4
1995-96	754	-	754
1999-00	3,397	565	3,962
2000-01	5,411	930	6,341
2001-02	6,061	1,495	7,556
2002-03	7,100	2,500	9,600
2003-04	9,200	3,600	12,800
2004-05	13,100	4,600	17,700
2005-06	17,300	6,300	23,600
2006-07	22,900	8,400	31,300

आइटीईएस : आइटी समर्थित सेवाएं बी.पी.ओ. : बिजनेस प्रोसेस से आउटसोर्सिंग

स्रोत : नेशनल एशोसिएशन ऑफ साफ्टवेयर एंड सर्विस कंपनी (नॉस्काम) ।

बॉक्स 3: भारत का आइटी - बीपीओ सेवा निर्यात: कार्यनिष्पादन और संभावनाएं

भारत के पास विशेषताओं का एक विचित्र संकलन है जिसने इसे सूचना प्रौद्योगिकी कारोबार संसाधन आउटसोर्सिंग (आईटी - बीपीओ) के लिए पसंदीदा समुद्रपारीय लक्ष्य के रूप में स्थापित किया है। नॉस्कॉम (एनएएसएससीओएम) के अनुसार राजकोषीय वर्ष 2001-2006 के दौरान वैश्विक आउटसोर्सिंग में भारत का हिस्सा सूचना प्रौद्योगिकी में 62 प्रतिशत से बढ़कर 65 प्रतिशत और कारोबार संसाधन आउटसोर्सिंग में 39 प्रतिशत से बढ़कर 45 प्रतिशत हो जाने का अनुमान है। नॉस्कॉम ने अनुमान लगाया है कि भारत का आइटी-बीपीओ क्षेत्र वर्ष 2010 तक निर्यात राजस्व में 60 बिलियन अमरीकी डॉलर और घरेलू राजस्व में 13-15 बिलियन अमरीकी डॉलर का लक्ष्य प्राप्त करने के पथ पर है। वृद्धि के मुख्य संचालक सुदृढ़ माँग संभावनाएं, सेवा क्षेत्र में और विस्तार की संभावनाएं तथा सूचना, संचार और प्रौद्योगिकी (आइसीटी) की भूमिका पर बढ़ता हुआ जोर, तथा सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात की नवोन्मेषिता रहे हैं। भारत के लिए उच्चतर पसंदगी इसकी अतुलनीय श्रेष्ठता है, इसका मूल्यांकन मानदण्डों की उन सभी श्रेणियों में किया जाता है जो सोर्स करने वाले स्थान के आकर्षण का निर्धारण करते हैं। 25 वर्ष से कम आयु की भारत की आधी आबादी के साथ भारत की युवा जनसंख्या अद्वितीय है और इसके अंतर्भूत लाभ हैं। इसके अलावा, यहां शैक्षणिक ढांचे के व्यापक नेटवर्क के साथ-साथ शिक्षित, अंग्रेजी बोलने वाले काफी अधिक संख्या में प्रतिभाशालियों का अतुलनीय मिश्रण है (नॉस्कॉम-2007) ।

नॉस्कॉम के अनुसार, भारतीय आइटी-बीपीओ क्षेत्र में राजकोषीय वर्ष 2007-08 के दौरान 28 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी प्रत्याशित है। घरेलू राजस्व को ध्यान में रखते हुए सकल राजस्व के 47.8 बिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ने तथा प्रत्यक्ष रोजगार के 1.6 मिलियन से अधिक होने का अनुमान है। यह उल्लेख किया जा सकता है कि सेवा और सॉफ्टवेयर निर्यात कुल निर्यात का लगभग दो-तिहाई रहते हुए इस क्षेत्र का मुख्य आधार बने रहेंगे। राजकोषीय वर्ष 2007-08 के दौरान यह वृद्धि पूर्व के अनुमानों से आगे जाते हुए 32 प्रतिशत से अधिक होने की संभावना है। लक्ष्य-वार विश्लेषण यह बतलाता है कि यूनाइटेड स्टेट्स को कुल निर्यात का 67 प्रतिशत तथा ब्रिटेन को 15 प्रतिशत निर्यात किया गया तथा ये निर्यात के प्रमुख बाजार रहे । हाल का विश्लेषण यह भी बतलाता है कि फर्में कारोबारी अवसरों और अपनी वैश्विक वितरण के सुदृढ़ीकरण के लिए नए भौगोलिक क्षेत्रों का तेजी से पता लगा रही हैं। क्षेत्र-वार विश्लेषण यह बतलाता है कि सूचना प्रौद्योगिकी (आइटी) का हिस्सा निर्यात का 55 प्रतिशत है।

बीपीओ मात्रा और विस्तार में लगातार बढ़ रहे हैं, जिसमें फर्मों द्वारा वृद्धिशील केंद्रित दृष्टिकोण अंगीकार किया गया है । इस संबध में, अनुप्रयोग और मूलभूत सुविधा प्रबंधन तथा परीक्षण के नए क्षेत्रों को महत्व प्राप्त हो रहा है। बैंकिंग, वित्तीय सेवाएं, बीमा और प्रौद्योगिकी (हाइ-टेक/टेलीकॉम) कुल आइटी-बीपीओ क्षेत्र का लगभग 60 प्रतिशत होते हुए, मुख्य वर्टिकल हैं। विनिर्माण, खुदरा, मीडिया, उपयोगिता, स्वास्थ्य रक्षण और परिवहन जैसे क्षेत्र भी तेजी से बढ़ रहे हैं। सेवा-लाइन विस्तार सेवा प्रदाताओं को बड़े और अधिक जटिल कारोबार शुरू करने में सहायता कर रहा है तथा भारतीय फर्मों को मिली संविदाओं की औसत टिकट साइज को भी संचालित कर रहा है। वितरण के उच्चतर समुद्रपारीय संघटक और बहु-स्थानिक वितरण के श्रेष्ठ निष्पादन मुख्य विभेदक बने हुए हैं। व्यापक आधारित उद्योग संरचना, बड़ी भारतीय फर्मों द्वारा संचालित सूचना प्रौद्योगिकी, भारतीय तथा एमएनसी तृतीय पक्ष प्रदाता और एजेंटों के द्वारा संचालित बीपीओ आपूर्ति आधार की मजबूती को दर्शाता है। बड़े खिलाड़ी वृद्धि को संचालित कर रहे हैं और उद्योग में उनका हिस्सा लगातार बढ़ रहा है।

स्रोत : नॉस्काम (2007): रणनीतिक समीक्षा - 2007 - भारत में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग

सारणी 8 : कंप्यूटर एवं सूचना सेवाओं का निर्यात

(बिलियन अमरीकी डालर)

क्रम.सं.	देश	2000	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6
1	**भारत**	**6.3**	**17.7**	**23.6**	**31.3**
2	आयरलैण्ड	7.5	18.8	19.6	21.0
3	ब्रिटेन	4.3	11.7	11.2	12.0
4	जर्मनी	3.8	8.1	8.3	9.6
5	अमरीका	5.6	6.7	7.5	7.6
6	इजराइल	4.2	4.4	4.5	5.3
7	कनाडा	2.4	3.1	3.9	4.0
8	स्पेन	2.0	3.0	3.6	4.0
9	नीदरलैण्ड	1.2	3.7	3.7	3.9
10	बेल्जियम	-	2.4	2.6	2.8

स्रोत : भुगतान संतुलन सांख्यिकी वर्ष बुक आइएमएफ और भारतीय रिज़र्व बैंक।

अनुसंधान, और लोकमत संग्रह सेवाएं, अनुसंधान और विकास सेवाएं, वास्तुशास्त्रीय, अभियांत्रिकी और अन्य तकनीकी सेवाएं, कृषि, खनन और कार्यस्थल पर प्रोसेसिंग सेवाएं, वितरण सेवाएं श्रव्य-दृश्य और संबंधित सेवाएं, वैयक्तिक और सांस्कृतिक सेवाएं शामिल हैं। प्रबंध परामर्शी सेवाएं उल्लेखनीय रूप से महत्वपूर्ण हुई हैं और इसमें निरंतर वृद्धि देखी गई है (बॉक्स 4)। हाल के वर्षों में कारोबारी सेवा भुगतानों में भी भारी वृद्धि हुई है जो निरंतर आधार पर प्रौद्योगिकीय उन्नयन पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित किए जाने के साथ अर्थव्यवस्था में जारी प्रौद्योगिकीय रूपांतरण और भारतीय उद्योग के आधुनिकीकरण को प्रतिबिंबित करती है ।

कारोबारी सेवा प्राप्तियों और भुगतानों, यथा - व्यापार संबंधी सेवा, व्यापार और प्रबंध परामर्शी सेवा, वास्तुशास्त्रीय, अभियांत्रिकी और अन्य तकनीकी सेवाओं तथा कार्यालयों के रखरखाव से संबंधित सेवाओं के मुख्य संघटकों का ब्योरा सारणी-10 में दिया गया है।

अभियांत्रिकी सेवाओं में मुख्य रूप से अभिकल्पन (डिजाइनिंग) में परामर्श और विस्तृत अभिकल्पन सेवाएं शामिल हैं। मूलभूत सुविधाओं की बढ़ती हुई माँग और सूचना प्रौद्योगिकी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के एक अनुकूल स्थान के रूप में भारत अभियांत्रिकी सेवाओं में व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण देश के रूप में उभर रहा है। नॉस्कॉम

सारणी 9: गैर-सॉफ्टवेयर विविध सेवा प्राप्ति और भुगतान के मदवार आँकड़े

(मिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	प्राप्ति				भुगतान			
	2005-06	2006-07	2006-07	2007-08	2005-06	2006-07	2006-07	2007-08
	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-सितं.	अप्रैल-सितं.	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-सितं.	अप्रैल-सितं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. संचार सेवाएं	1,575	2,099	1,056	896	289	659	269	281
2. निर्माण	242	332	158	243	723	737	424	227
3. वित्तीय	1,209	2,913	935	1,510	965	2,087	628	1,481
4. समाचार एजेंसी	185	334	147	237	130	219	74	212
5. रॉयल्टी, कॉपीराइट और लाइसेंस शुल्क	191	97	32	79	594	1,038	353	368
6. कारोबारी सेवाएं	9,307	19,266	7,954	6,380	7,748	17,093	5,902	6,195
7. वैयक्तिक, सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवाएं	189	173	59	168	84	116	58	81
8. अन्य	5,607	1,042	638	465	5,998	4,357	2,238	838
कुल (1 से 8)	**18,505**	**26,256**	**10,979**	**9,978**	**16,531**	**26,306**	**9,946**	**9,683**

टिप्पणी : कारोबारी सेवाओं (मद 6) के अलग-अलग आँकड़े सारणी 10 में दिए गए हैं।

बॉक्स 4 : भारत की प्रबंध परामर्शी सेवाओं की निर्यात संभावना

प्रबंध परामर्श में विशिष्ट रूप से प्रशिक्षित और योग्य व्यक्तियों के द्वारा संगठनों को उपलब्ध करायी गई वे संविदाकृत सेवाएं शामिल हैं जो एक वस्तुनिष्ठ और स्वतंत्र तरीके से ग्राहक संगठन की प्रबंध समस्याओं को पहचानने, ऐसी समस्याओं का विश्लषण करने, ऐसी समस्याओं के लिए समाधानों की सिफारिश करने तथा अनुरोध किए जाने पर ऐसे समाधानों के कार्यान्वयन में सहायता प्रदान करती हैं। अभियांत्रिकी परामर्श को निर्माण, विनिर्माण, खनन, परिवहन और पर्यावरण क्षेत्र की गतिविधियों के व्यापक क्षेत्र के लिए भौतिक विधि और अभियांत्रिकी सिद्धांतों के अनुप्रयोग के रूप में परिभाषित किया गया है।

गत वर्षों में चूँकि भारतीय उद्योग परिपक्व हो रहा है, भारतीय परामर्श उद्योग न केवल आकार के मामले में बल्कि प्रदान की गई सेवाओं के मामले में भी बढ़ना शुरू हो गया है । भारत में ग्राहकों द्वारा विशिष्ट परामर्श सलाहों की माँग की जाने लगी है और इसने कई विशेषज्ञ संगठनों को अपना विशेषज्ञ ज्ञान आधार बनाने तथा विशेषज्ञ पारमर्शी सेवाओं की मांग पूरी करने के लिए संसाधन जुटाने के अवसर मुहैया कराए हैं ।

सरकारी प्रयास

हाल की अवधि में, भारत की व्यापार नीति भारत की सेवाओं में व्यापार के तुलनात्मक लाभ के रणनीतिक महत्त्व को दर्शाती है। सेवा क्षेत्र की पहचान व्यापार नीति के एक प्रबल क्षेत्र के रूप में की गई है। विदेश व्यापार नीति 2004-09 में आयात बाजारों की मुख्य सेवाओं के अवसरों को निर्धारित करने और रणनीतिक बाजार प्रवेश कार्यक्रम विकसित करने के लिए एक सेवा निर्यात उन्नयन परिषद गठित करने की घोषणा की गई थी। परामर्शी सेवाओं के निर्यात प्रोत्साहन हेतु सरकार के कुछ मुख्य प्रयास बाजार विकास सहायता (एसडीए), बाज़ार प्रवेश पहल (एमएआइ) योजना, पूर्वसक्रिय निर्यात-आयात नीति और निर्यात-आयात बैंक योजनाओं के माध्यम से किए गए हैं। सरकार, परामर्शी सेवाओं के निर्यात पर सेवा-कर से छूट भी उपलब्ध कराती है।

परामर्शी सेवाओं की वृद्धि की संभावना दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्वी अफ्रीकी देशों में उच्चतर रहने की परिकल्पना की गई है क्योंकि ये देश विविध क्षेत्रों में तेज विकास योजनाओं का अनुगमन कर रहे हैं। स्वतंत्र राज्य देशों (सी आइ एस) के कॉमनवेल्थ में यद्यपि सभी के पास विकास की कार्य-सूची है, लेकिन उनके पास तुलनात्मक रूप से वह तेज रफ्तार नहीं है जैसी कि पूर्वी अफ्रीकी देशों में है और विकास संभावना कुछ ही क्षेत्रों तक सीमित है। मुख्य रणनीतियाँ और कारवाई योग्य योजनाएं विस्तृत रूप से चार निम्नलिखित श्रेणियों में बाँटी गई हैं:(i) बाजार की समझ, जिसमें लक्ष्य बाजारों में क्षेत्र आधारित अन्वेषी अध्ययन संचालित करना, स्थानीय परामर्शदाताओं के डेटाबेस का सृजन, बाजार आसूचना संग्रह के लिए प्रणाली तैयार करना शामिल है, (ii) प्रोन्नयन, जिसमें लक्ष्य देशों में "परामर्शी व्यापार बाजार (सीटीएम)" संगठित करना, लक्ष्य देशों के लिए भारतीय उद्योग के शिष्टमंडलों का गठन, इन देशों के भारतीय दूतावासों के भीतर भारतीय परामर्शी सामर्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा करना, कर-लाभ, भारतीय परामर्शी कारोबार के निरंतर प्रोत्साहन के लिए एक केंद्रीय एजेंसी की पहचान करना और उसे अधिकार सम्मत बनाना तथा द्विपक्षीय और बहु-पक्षीय संस्थाओं के साथ निकट संपर्क विकसित करना शामिल है, (iii) विपणन पर ध्यान सकेंद्रण, जिसमें स्थानीय परामर्शी फर्मों के साथ रणनीतिक संधियाँ, परामर्शी विकास निधि (सीडीएफ) का सृजन तथा विलयन और अधिग्रहण शामिल है, (iv) गुणवत्ता आश्वासन जिसमें गुणवत्ता आश्वासन के लिए एक नियंत्रक की नियुक्ति शामिल है।

स्रोत: भारत में परामर्श और प्रबंध सेवा निर्यात संवर्धन, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

सारणी 10 : कारोबारी सेवाएं

(मिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	प्राप्ति				भुगतान			
	2005-06	2006-07	2006-07	2007-08	2005-06	2006-07	2006-07	2007-08
	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-सितंबर	अप्रैल-सितंबर	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-सितंबर	अप्रैल-सितंबर
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. व्यापार संबंधित	521	940	345	788	1,206	1,655	548	684
2. कारोबार और प्रबंध परामर्श	2,320	7,345	2,989	1,783	1,806	5,027	1,452	1,698
3. वास्तुशास्त्रीय, अभियांत्रिकी और अन्य तकनीकी	3,193	6,134	2,329	1,392	1,414	3,673	1,194	973
4. कार्यालयों का रखरखाव	1,577	2,335	1,199	975	2,074	3,424	1,349	882
5. अन्य	1,696	2,512	1,092	1,442	1,248	3,314	1,359	1,958
कुल	**9,307**	**19,266**	**7,954**	**6,380**	**7,748**	**17,093**	**5,902**	**6,195**

टिप्पणी : कारोबारी सेवाएं गैर-सॉफ्टवेयर विविध सेवाओं का भाग हैं जिसके ब्योरे सारणी 9 में दिए गए हैं।

(2006) के अनुसार अभियांत्रिकी सेवाओं के लिए वैश्विक व्यय का अनुमान वर्ष 2006 में 750 बिलियन अमरीकी डॉलर है। वर्ष 2020 तक समूचे विश्व में अभियांत्रिकी सेवाओं पर व्यय में 1 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक तक बढ़ोत्तरी की आशा है। 750 बिलियन अमरीकी डॉलर में से केवल 10-15 बिलियन अमरीकी डॉलर का वर्तमान में ऑफ-शोर किया गया है। यह परिकल्पित है कि भारत के पास अभियांत्रिकी सेवा निर्यात और ऑफशोरिंग के बढ़ते हुए बाजारों से लाभ उठाने की क्षमता है (बॉक्स 5) ।

वित्तीय सेवाओं सहित सेवाओं में व्यापार की भूमिका ऐसी सेवाओं के बढ़ते उदारीकरण पर जोर की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो जाती है। वित्तीय सेवाओं में व्यापार उदारीकरण 'सेवाओं में व्यापार पर सामान्य करार' (जीएटीएस) के भाग के रूप में व्यापार पर वार्ता का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है जो मुख्यतः विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सदस्यों के साथ बहुपक्षीय वार्ता पर आधारित है। नीति संबंधी निर्णयों की अपेक्षाओं को दृष्टिगत रखते हुए और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप, वित्तीय सेवाओं पर संगत और तुलनात्मक जानकारी महत्त्वपूर्ण हो जाती है (बॉक्स 6)।

III.1.2.1 कारोबारी सेवाओं में आँकड़ों का संशोधन

अन्य बातों के साथ-साथ, वित्तीय वर्ष 2005-06 और 2006-07 के आँकड़ों में संशोधन कारोबारी सेवाओं और सॉफ्टवेयर सेवाओं के बीच संभाव्य अतिक्रमण के मामले को ध्यान में रखता है। तदनुसार 'प्राधिकृत व्यापारियों' (एडी) द्वारा रिपोर्ट किए गए आँकड़ों की समीक्षा की गई और प्रतिसूचना के आधार पर कारोबारी सेवाओं के विभिन्न संघटकों में संशोधन किया गया है। कारोबारी सेवाओं पर संशोधित आँकड़े सारणी 11 में दिए गए हैं।

III.1.3 यात्रा

यात्रा के अन्तर्गत प्राप्तियाँ विदेशी यात्रियों द्वारा किए गए होटल व्यय तथा घरेलू यात्रा सहित वस्तुओं और सेवाओं की खरीद पर किए गए व्यय का प्रतिनिधित्व करती हैं। यात्रा प्राप्तियों में लाभ यात्रियों के आगमन में भारी बढ़ोतरी से बना रहा (सारणी 12)। पर्यटन आय में वर्ष

बॉक्स 5 : अभियांत्रिकी सेवाएँ - निर्यात संभावना

अभियांत्रिकी सेवाओं में मुख्यतः अभिकल्पन और विस्तृत अभिकल्पन अर्थात संयंत्र खड़ा करने सहित निर्माण, टर्नकी संविदा तथा पूँजीगत माल की खरीद तथा सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित अन्य सेवाओं (आइटीइएस) में परामर्श शामिल है। विश्व व्यापार संगठन के अनुसार, अभियांत्रिकी सेवाओं में भवनों तथा अन्य ढांचों के लिए अभियांत्रिकी फर्मों द्वारा ब्लूप्रिंट और अभिकल्प उपलब्ध कराना तथा अभियांत्रिकी फर्मों द्वारा भवन ढांचे के लिए प्रदान की गई आयोजना, अभिकल्प, निर्माण और प्रबंध सेवाएं, संस्थापन, नागरिक अभियंत्रण कार्य और औद्योगिक प्रक्रियाएं शामिल हैं। भारत में अभियांत्रिकी सेवाएं "कारोबारी सेवा" शीर्ष के अंतर्गत रिपोर्ट की जाती हैं जिसमें वास्तुशास्त्रीय, अभियांत्रिकी और अन्य तकनीकी सेवाएं शामिल हैं । वास्तुशास्त्रीय फर्में भवन तथा अन्य ढांचों के लिए नक्शे और अभिकल्प उपलब्ध कराती हैं जबकि अभियांत्रिकी फर्में भवन संरचना, संस्थापनों, नागरिक अभियंत्रण कार्य और औद्योगिक प्रक्रियाओं के लिए आयोजना, अभिकल्प, निर्माण और प्रबंध सेवाएं उपलब्ध कराती हैं।

बूज एलेन हेमिल्टन के सहयोग के साथ नॉस्कॉम द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, अभियांत्रिक सेवाओं पर किया गया वैश्विक व्यय बहुत अधिक और वृद्धिशील है, जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (वर्ष 2006 में 750 बिलियन अमरीकी डॉलर) का 2 प्रतिशत है, जिसके वर्ष 2020 तक 1.1 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर तक बढ़ने का अनुमान है। लगभग 10-15 बिलियन अमरीकी डॉलर की अभियांत्रिकी सेवाएँ समुद्रपारीय हैं, इस बाजार के वर्ष 2020 तक 150-225 बिलियन अमरीकी डॉलर तक बढ़ने की आशा है। कंपनियाँ, लगातार इस उच्च मूल्य की अभियांत्रिकी सेवाओं को उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में ले जा रही हैं और भारत को विश्व की माँग को पूरा करने के लिए आउटसोर्स/ समुद्रपारीय अभियांत्रिकी सेवाओं का तुलनात्मक लाभ मिल रहा है। भारत में समुद्रपारीय अभियांत्रिकी बाजार का हिस्सा वर्ष 2020 तक 12 प्रतिशत से बढ़कर 30 प्रतिशत हो सकता है। समुद्रपारीय अभियांत्रिकी सेवा बाजार में भारत का वर्तमान राजस्व आधार 1.5 बिलियन अमरीकी डालर है । भारत में संभावित अभियांत्रिकी बाजार वर्ष 2020 तक 60 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक हो सकता है । समुद्रपारीय अभियांत्रिकी सेवाओं में वृद्धि का मुख्य कारण समुद्रपारीय बाजारों तक सहज पहुँच के साथ कीमतों में कमी की दीर्घकालिक इच्छा है। अभियांत्रिकी सेवाएं व्यय साध्य हैं और केवल सेवाओं को समुद्रपारीय देशों तक ले जाने के द्वारा श्रमिक लागतों में कमी के काफी अवसर हैं।

भारत जबकि वायु अंतरिक्ष, स्वचालन और औद्योगिक/संयंत्र स्वचालन में अभियांत्रिकी सेवाओं की आउटसोर्सिंग करता है, प्रमुख समुद्रपारीय अभियांत्रिकी सेवाएं निर्माण क्षेत्र में हैं। समुद्रपारीय अभियांत्रिकी सेवाओं पर नॉस्कॉम-बूज़ एलेन हेमिल्टन की रिपोर्ट के अनुसार, यद्यपि वर्ष 2010 तक अभियांत्रिकी सेवाओं में भारत की संभावना 12-16 बिलियन अमरीकी डॉलर है, सर्वाधिक संभावित परिदृश्य 3-5 बिलियन अमरीकी डॉलर होगा। पारंपरिक, ऊर्ध्ववत रूप से समेकित उद्योगों जैसे स्वचालन, एरोस्पेस और नौ-अभियांत्रिकी के आउटसोर्सिंग की ओर बढ़ने की गति, अभियांत्रिकी केंद्रों से सहबद्ध विश्वसनीय प्रौद्योगिकी के अभाव, अभियांत्रित किए जानेवाले उत्पादों की अंतर्निहित जटिलता तथा प्रतिस्पर्धी, विधिक अथवा वाणिज्यिक मामलों के कारण धीमी रही है। वर्ष 2010 तक इसमें बदलाव की आशा है क्योंकि अभियांत्रिक सहयोग प्रौद्योगिकी में सुधार हो रहा है और समूचे संसार के बाजारों के लिए उत्पादों का विकास करने हेतु विभिन्न उद्योग बढ़ते प्रतिस्पर्धात्मक दबाव के अंतर्गत आ रहे हैं।

विभिन्न स्वरूप के उद्योग लगातार जटिल अभियांत्रिकी प्रक्रियाओं की आउटसोर्सिंग प्रवृत्ति के कारण अपनी अभियांत्रिकी सेवाओं को अंशतः ऑफशोर करना शुरू कर रहे हैं। कार और वायुयान जैसी उच्चतर अभियांत्रिक वस्तुओं के समेकित उत्पाद विकास जैसे क्षेत्र पिछड़ गए हैं। लेकिन इसमें परिवर्तन हो रहा है क्योंकि अभियांत्रिकी सेवा प्रस्ताव जटिलता में शुरू होते हैं। स्थानीय अभियांत्रिकी प्रतिभा और अधिक आधुनिक हो रही है और चूँकि भारत जैसे स्थानीय बाजार ने अधिक से अधिक जटिल उत्पाद शुरू किए हैं, वे और अधिक अभियांत्रिकी प्रतिभा को आकर्षित कर रहे हैं।

बॉक्स 6 : वित्तीय सेवाओं में व्यापार और बढ़ता हुआ वैश्वीकरण

वित्तीय सेवाएं उन सेवाओं में से हैं जिन्होंने सेवाओं के अंतरराष्ट्रीय कारोबार में विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया है। वित्तीय सेवाओं में व्यापक रूप से उन कार्यों का उल्लेख है जो वित्तीय संस्थाओं द्वारा निष्पादित की जाती हैं, उदाहरणार्थ : जमाराशियों का स्वीकरण, उधार देना, भुगतान सेवाएं, प्रतिभूतियों का कारोबार, आस्ति प्रबंधन, वित्तीय सलाह परामर्श, निपटान और समाशोधन सेवाएं आदि, और ये कार्य वित्तीय सेवाओं के अंतरराष्ट्रीय व्यापार का भाग बनने वाले अनिवासियों के साथ सामूहिक रूप से किए जाते हैं। वित्तीय सेवाओं में केवल जीवन बीमा कंपनियों और पेंशन निधियों को छोड़कर (जो जीवन बीमा सेवाओं और पेंशन निधीयन में शामिल हैं) वित्तीय मध्यस्थता और अनुषंगी सेवाएं तथा अन्य बीमा सेवाएं शामिल हैं जो निवासियों और अनिवासियों के बीच संचालित की जाती हैं। ऐसी सेवाएं बैंकों, शेयर बाजारों, कारक उद्यमों, क्रेडिट कार्ड उद्यमों और अन्य उद्यमों द्वारा उपलब्ध करायी जा सकती हैं।

सेवाओं के बढ़ते हुए महत्त्व को पहचानते हुए तथा विस्तृत भुगतान संतुलन सांख्यिकी की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक ने "सेवाओं में अंतरराष्ट्रीय व्यापार की सांख्यिकी" पर एक तकनीकी कार्यदल का गठन किया जिसने मार्च 2002 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस कार्यदल की अनुशंसाओं के आधार पर रिपोर्टिंग प्रणाली को लेन-देन के वर्गीकरणों का विस्तार करते हुए नया स्वरूप प्रदान किया गया जिससे वर्ष 2004-05 के दौरान विस्तृत भुगतान संतुलन के अनुसार अलग-अलग आँकड़ों के संग्रह में सुविधा हुई।

तदनुसार, विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, (फेमा 1999) के अंतर्गत प्रशासनिक अपेक्षाओं के एक भाग के रूप में, प्राधिकृत व्यापारी (एडी) शाखाओं के लिए, जो विदेशी मुद्रा लेन-देन के लिए प्राधिकृत हैं, आवश्यक है कि वे विदेशी मुद्रा लेन-देन इलेक्ट्रॉनिक रिपोर्टिंग प्रणाली (फेटर्स) के माध्यम से पाक्षिक आधार पर भारतीय रिज़र्व बैंक को अपने द्वारा किए गए सभी विदेशी मुद्रा लेन-देनों को रिपोर्ट करें। प्राधिकृत व्यापारी रिपोर्टिंग के आधार, वित्तीय सेवाओं की जानकारी को तीन मुख्य शीर्षों के अन्तर्गत संकलित किया जाता है यथा; (i) बैंक प्रभारों, वसूली प्रभारों, एल सी प्रभारों, वायदा संविदा के निरसन, वित्तीय पट्टेदारी पर कमीशन आदि, जैसी वित्तीय मध्यस्थता, (ii) दलाली, हामीदारी कमीशन आदि जैसे निवेश बैंकिंग के लिए वित्तीय मध्यस्थता और (iii) अनुषंगी सेवाओं जैसे परिचालन तथा विनियमन शुल्कों, अभिरक्षक सेवाओं, निक्षेपागार सेवाओं आदि पर प्रभार।

वित्तीय बाजारों और गतिविधियों के आर्थिक समन्वयन में सुधार के कारण बैंकिंग सेवाओं के अंतरराष्ट्रीय व्यापार में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, शाखाओं, एजेंसियों और सहायक कंपनियों अथवा सीमापारीय विलयन और अधिग्रहण के रूप में हुआ बैंकिंग में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश 1980 के दशक की शुरुआत तथा 1990 के दशक के अंत (कॉजीनिस, 2005) के बीच बढ़ा है।

गैट संरचना यह निर्धारित करती है कि किसी वाणिज्यिक सेवा की सुपुर्दगी चार स्वरूपों में की जा सकती है। सेवा के स्वरूप 1 में बैंक की सेवा आयातक देश की जमीन पर उपस्थिति नहीं होती है लेकिन ग्राहक को सेवा उसके निवास के देश में उपलब्ध करायी जाती है। उस स्थान की जहाँ सेवा प्रदान की जानी है, परिभाषा देना अक्सर बहुत कठिन होता है और इसलिए सीमापारीय बैंकिंग सेवा के स्वरूप 2 के साथ मिश्रित हो जाती है। सेवा की आपूर्त्ति (विदेश में उपभोग) के स्वरूप 2 में उपभोक्ता निवासी देश के क्षेत्र के बाहर सेवा प्राप्त करता है। यद्यपि, परिभाषा में उपभोक्ता की आवाजाही के बारे में नहीं बताया गया है, अक्सर यह माना जाता है के स्वरूप 2 ऐसी सेवाओं के संदर्भ में है जो विदेश में यात्रा कर रहे उपभोक्ता को उपलब्ध करायी जाती है। सेवा आपूर्त्ति के स्वरूप 3 में, सेवा आयातक देश की सीमा के भीतर बैंक की वाणिज्यिक उपस्थिति होती है और सेवा वहीं पर प्रदान की जाती है। यह वाणिज्यिक उपस्थिति प्रतिनिधि कार्यालयों, बैंक शाखाओं, सहायक कंपनियों, संघों और संवाददाताओं जैसी विभिन्न निवेश सुविधाओं के माध्यम से हो सकती है। सेवा आपूर्ति के स्वरूप 4, में आयातक देश में बैंक की वाणिज्यिक उपस्थिति होती है और सेवा की सुपुर्दगी निर्यातक देश के राष्ट्रिकों के माध्यम से की जाती है।

संदर्भ :

1. भारतीय रिज़र्व बैंक (2007), 'बैंकिंग सेवाओं में अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए सांख्यिकी पर तकनीकी कार्यदल की रिपोर्ट', मार्च।
2. संयुक्त राष्ट्र (2002), सेवाओं में अंतरराष्ट्रीय व्यापार की सांख्यिकी पर मैनुअल।

सारणी 11 : कारोबार सेवाओं के आंकड़ों में संशोधन

(मिलियन अमरीकी डालर)

मद	2005-06	2006-07			
		प्रकाशित	संशोधित	प्रकाशित	संशोधित
1		2	3	4	5
1. कारोबारी सेवा प्राप्तियां		12,858	9,307	23,459	19,266
2. कारोबारी सेवा भुगतान		10,496	7,748	20,200	17,093
3. निवल (1 - 2)		2,362	1,559	3,259	2,173

2003-04 से ही उछाल बनी रही जो कारोबारी और अवकाश यात्राओं दोनों में दिखाई दी। भुगतान प्रणाली के उदारीकरण, बढते हुए वैश्वीकरण, बढ़ते सेवा निर्यात और संबद्ध कारोबारी यात्रा ने वर्ष 1990 के दशक के दौरान भारत से बाहर की यात्राओं में बढ़ोतरी बनाए रखी। इसी के साथ-साथ यात्रा भुगतानों में भी वृद्धि हुई जो (i) बढ़ते हुए व्यापारिक माल और सेवा व्यापार तथा (ii) उदारीकरण भुगतान व्यवस्था के वातावरण में निवासियों की बढ़ती हुई प्रयोज्य आय के अनुरूप बढ़ते हुए कारोबार तथा अवकाश यात्रा में प्रतिबिम्बित हुआ। बृहत्तर अवकाश पर्यटन और कारोबार यात्रा की संभावना यह संकेत करती है कि निकट भविष्य में इस संभाग में निरंतर वृद्धि बनी रहेगी। कुल सेवा निर्यातों के प्रतिशत के रूप में यात्रा प्राप्तियाँ पिछले वर्षों के दौरान घटती रही हैं क्योंकि सेवा निर्यात के नए रूप उत्पन्न हुए हैं और 1990-91 के 32.0 प्रतिशत की तुलना में वर्ष 2006-07 के दौरान कुल सेवा प्राप्तियाँ 12.0 प्रतिशत रही है। यात्रा खाता पर अधिशेष वर्ष 2005-06 के दौरान 1.2 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2006-07 के दौरान 2.4 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। विश्व पर्यटन आय में भारत का स्थान वर्ष 2006 में 18वां रहा जबकि वर्ष 1990 में उसका स्थान 23वां था (सारणी 13)।

सारणी 2 : भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन

वर्ष	आगमन (मिलियन)
1	2
1991	1.68
1995	2.12
2000	2.65
2001	2.54
2002	2.38
2003	2.73
2004	3.46
2005	3.90
2006	4.40

स्रोत : पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार।

III. 1.4 परिवहन

पिछले वर्षों में बढ़ते व्यापारिक माल व्यापार के कारण परिवहन की प्राप्ति और भुगतान, जो मुख्यतः वस्तुओं की ढुलाई और प्राकृतिक व्यक्तियों के साथ-साथ अन्य वितरण सेवाओं (जैसे बन्दरगाह प्रभार, बंकर ईंधन, जहाजी कुली, अनुतर यात्रा, मालगोदाम) का प्रतिनिधित्व करते हैं, में भी पिछले वर्षों में वृद्धि हुई है। परिवहन के लिए प्राप्ति एवं भुगतान दोनों बढ़ रहे हैं तथापि, निवल राशि बहुत कम है । वर्ष 2000-01 से 2006-07 की अवधि के दौरान परिवहन प्राप्तियाँ कुल सेवा निर्यात का लगभग 12 प्रतिशत थीं। कुल सेवा निर्यात के अनुपात के रूप में परिवहन प्राप्तियों का हिस्सा सेवा निर्यात के नये आयामों के आने के कारण वर्ष 1990-91 के 21.6 प्रतिशत से गिरकर 2006-07 में 10.6 प्रतिशत हो गया।

III.1.5 बीमा

बीमा के अंतर्गत निर्यात/आयात पर बीमा, जीवन और गैर-जीवन पॉलिसियों पर प्रीमियम तथा विदेशी

बीमा कंपनियों से पुनर्बीमा प्रीमियम शामिल हैं। बीमा प्राप्तियाँ और भुगतान सामान्यतः भारत के व्यापारिक माल व्यापार की गतिविधियों से संबद्ध हैं। कुल सेवा प्राप्तियों में बीमा प्राप्तियों का हिस्सा वर्ष 1990 के दशक की शुरुआत से ही कुल सेवा निर्यात के लगभग 2 प्रतिशत की एक संकुचित सीमा में रहा है।

III.1.6 'विविध सेवाएं' संघटक

सॉफ्टवेयर सेवाओं, व्यापारिक सेवाओं, यात्रा, परिवहन और बीमा के अतिरिक्त सेवा व्यापार के अंतर्गत 'विविध सेवा' संघटक में संचार, वित्तीय, निर्माण और वैयक्तिक, सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवाओं जैसी कई अन्य वाणिज्यिक सेवाएं शामिल हैं। प्राप्ति और भुगतान दोनों सेवाओं में मुख्यतः घरेलू अर्थव्यवस्था के प्रौद्योगिकीय रूपांतरण के चलते महत्त्वपूर्ण बढ़ोतरी दिखाई दी है (देखें सारणी 9)।

सारणी 13 : शीर्ष यात्रा आय देशों के बीच भारत की तुलनात्मक स्थिति, 2006

क्रम सं.	देश	बिलि. अम. डालर	विश्व यात्रा आय में अंश (प्रतिशत)
1	2	3	4
1	अमरीका	106.7	14.5
2	स्पेन	51.3	7.0
3	फ्रांस	46.5	6.3
4	इटली	38.3	5.2
5	चीन	33.9	4.6
6	ब्रिटेन	33.9	4.6
7	जर्मनी	32.8	4.5
8	ऑस्ट्रेलिया	17.9	2.4
9	टर्की	16.9	2.3
10	कनाडा	14.7	2.0
11	ग्रीस	14.4	2.0
12	थाइलैण्ड	12.4	1.7
13	मैक्सिको	12.2	1.6
14	नीदरलैण्ड	11.5	1.6
15	बेल्जियम	11.4	1.5
16	मलेशिया	10.4	1.4
17	स्वीडन	9.1	1.2
18	**भारत**	**8.6**	**1.2**
19	पुर्तगाल	8.4	1.1

II.2 अंतरण

अंतरण में कार्यालयीन अंतरण और निजी अंतरण शामिल हैं। निजी अंतरण मुख्यतः कामगारों के विप्रेषण, सुदृढ़ वैश्विक उत्पादन वृद्धि की पृष्ठभूमि में, हाल के वर्षों में अधिक रहे हैं, घरेलू स्तर पर विप्रेषण मूलभूत सुविधा में निरंतर सुधार हो रहा हैं । निजी अंतरणों के ब्योरे नीचे दिए गए हैं।

II.2.1 निजी अंतरण : परिवार के भरण-पोषण के लिए विप्रेषण तथा अनिवासी भारतीय जमा खातों से स्थानीय आहरण

विदेश स्थित भारतीयों से अंतर्वाह मुख्यतः (i) परिवार के भरण-पोषण के लिए आवक विप्रेषण और (ii) भारतीय बैंकों में अनिवासी भारतीय (एनआरआइ) जमाराशि योजना में जमाराशियों के स्वरूप में होते हैं। तथापि, विदेश स्थित भारतीयों के विप्रेषण में परिवार के भरण-पोषण हेतु विप्रेषण और अनिवासी भारतीय (एनआरआइ) रुपया जमाराशि [एनआरइ(आर)ए और अनिवासी सामान्य जमाराशि योजना] से घरेलू स्तर पर आहरित निधि के अंतर्वाह शामिल हैं। विदेश स्थित भारतीयों से ऐसे विप्रेषण को निजी अंतरण माना जाता है जिसे भुगतान संतुलन के चालू खाते में शामिल किया जाता है। इसके विपरीत अनिवासी भारतीय जमाराशि योजना में जमा करने के लिए विदेश स्थित अनिवासी भारतीयों से अंतर्वाह को पूँजी खाता लेन-देन माना जाता है।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के भुगतान संतुलन मैनुअल के 5वें संस्करण (1993) के अनुसार 'अंतरण' एक-पक्षीय लेन-देन होता है अर्थात जिसका कोई प्रतिदान नहीं होता जैसे कि अनुदान, दान, परिवार के भरण-

पोषण हेतु विप्रेषण द्वारा प्रवासी अंतरण, प्रवासियों की आवासीय स्थिति में परिवर्तन के चलते बचत का प्रत्यावर्तन तथा वित्तीय और वास्तविक संसाधनों का अंतरण ।

III. 2.1.1 निजी अंतरण की प्रवृत्ति (कामगारों का विप्रेषण)

कामगारों के विप्रेषण हाल के वर्षों में अधिक रहे हैं। वर्ष 1980 के दशक के दौरान मध्य पूर्व में तेल की उछाल तथा वर्ष 1990 के दशक में सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति के फलस्वरूप भारत में कामगारों के विप्रेषण में आयी तेजी ने भारत को विश्व में उच्चतम विप्रेषण प्राप्त करने वाले देशों में स्थापित किया है। मध्य-पूर्व से अर्द्ध-कुशल/अकुशल श्रमिकों की माँग वर्ष 1970 के दशक के मध्य में शुरू हुई और वह वर्ष 1980 के दशक की शुरुआत में ऊँचाई पर पहुँच गई जिसके बाद सूचना प्रौद्योगिकी उछाल के कारण वर्ष 1990 के दशक के मध्य में दूसरी लहर आई। विदेश स्थित भारतीयों से विप्रेषण अंतर्वाह वर्ष 1990-91 के 2.1 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2006-07 में 29.0 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारी तेजी आने से प्रवासी कामगारों के प्रव्रजन की दूसरी लहर अमेरिका में 1990 के दशक के मध्य में शुरू हुई (सारणी 14)। इस प्रकार, अमरीका जाने वाले कामगारों का प्रव्रजन पैटर्न अकुशल/अर्द्ध-कुशल से बदलकर उच्च कौशल युक्त कामगारों में परिवर्तित हो गया।

वर्ष 1999-2000 से कामगारों का विप्रेषण भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग तीन प्रतिशत रहा है और इसने भारत के भुगतान संतुलन में पर्याप्त सहायता की है। इसने भारत के व्यापारिक माल व्यापार घाटे की भारी मात्रा की पूर्ति की है जिसके चलते वर्ष 1990 के दशक से चालू खाता घाटा बहुत कम स्तर पर रहा है। अन्य पूँजी खाता मदों जैसे अनिवासी भारतीय जमाराशि, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और संविभाग निवेश संबंधी निजी अंतरण भी कम उतार-चढ़ाव भरा रहा है। भारत को विप्रेषणों का एक उल्लेखनीय भाग मध्य-पूर्व के तेल निर्यातक देशों से अंतर्वाह के रूप में प्राप्त होता रहा है। इस प्रकार, भारत को विप्रेषणों का व्यवहार इन देशों के वृद्धि स्वरूप से प्रभावित होना संभावित है जो तेल की कीमतों के रूप में भली प्रकार प्रतिबिंबित होगा। भारत में विप्रेषण अंतर्वाह का एक दूसरा महत्त्वपूर्ण स्रोत अमरीका है। भारतीय संदर्भ में, प्रत्यावर्तित कामगारों द्वारा विप्रेषित निधियों का एक प्रमुख भाग स्थानीय आहरणों के रूप में अनिवासी जमाराशियों में अंतर्वाह के माध्यम से भेजा गया है।

सारणी 14 : भारत को निजी अंतरणों के चुनिंदा संकेतक

वर्ष	राशि (बिलियन अमरीकी डालर)	चालू प्राप्तियों में भाग (प्रतिशत)	निजी अंतरण (जीडीपी की तुलना में प्रतिशत)
1	2	3	4
1990-91	2.1	8.0	0.7
1995-96	8.5	17.1	2.4
1999-00	12.3	18.3	2.7
2000-01	13.1	16.8	2.8
2001-02	15.8	19.4	3.3
2002-03	17.2	18.0	3.4
2003-04	22.2	18.5	3.7
2004-05	21.1	13.6	3.0
2005-06	25.0	12.8	3.1
2006-07	29.0	11.9	3.2

कामगारों के विप्रेषण में उल्लेखनीय वृद्धि के कई कारक उत्तरदायी हैं। पहला, वर्ष 1990 के दशक में विशेष रूप से अस्थायी कार्य परमिट पर आस्ट्रेलिया, कनाडा और यूएस जाने वाले सूचना प्रौद्योगिकी (आइटी) क्षेत्र के प्रवासी कामगारों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई । दूसरे, प्रवासियों की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ विदेश से विप्रेषित राशि में भी वृद्धि हुई जिसका कारण विनियमावली और नियंत्रण में ढील दिया जाना, लचीली विनिमय दर तथा पूँजी खाते को क्रमशः खोला जाना है। भारतीय और अंतरराष्ट्रीय बैंकों द्वारा उपलब्ध करायी गई सुविधाजनक विप्रेषण सेवाओं ने भी अनौपचारिक हवाला माध्यमों से औपचारिक माध्यमों की ओर ऐसे विप्रेषणों को बदला है। तीसरे, अनिवासी भारतीय भी कई आकर्षक जमा योजनाओं की ओर आकर्षित हुए हैं।

III.2.1.2 विप्रेषणों की संरचना

निजी अंतरणों के ब्योरे नीचे दिए जा रहे हैं जिनमें पारिवारिक भरण-पोषण के लिए विप्रेषण, अनिवासी रुपया खाता से स्थानीय आहरण, यात्री सामानों के माध्यम से लाए गए स्वर्ण और चाँदी तथा धर्मादाय / धार्मिक संस्थाओं को दिए गए व्यक्तिगत उपहार / दान शामिल हैं।

III.2. 1.2.1 पारिवारिक भरण-पोषण के लिए विप्रेषण

पारिवारिक भरण-पोषण के लिए समुद्रपारीय भारतीयों द्वारा प्रत्यावर्तित विप्रेषण का हिस्सा जो वर्ष 1999-2000 के दौरान भारत में विप्रेषण प्रवाह के उल्लेखनीय हिस्से के रूप में 60 प्रतिशत था वर्ष 2006-07 के दौरान घटकर 47 प्रतिशत हो गया (सारणी 15)। वर्ष 2007-08 की पहली छमाही में पारिवारिक भरण-पोषण के लिए प्रत्यावर्तित विप्रेषणों का हिस्सा भारत में कुल विप्रेषण प्रवाह का 50 प्रतिशत था।

पारिवारिक भरण-पोषण मार्ग के जरिए विप्रेषण के अंतर्गत उच्च मूल्य लेन-देनों का जुलाई-सितंबर 2007 की तिमाही के लिए विश्लेषण किया गया। यह उल्लेख किया जा सकता है कि इस तिमाही के दौरान कुल निजी अंतरण 10.4 बिलियन अमरीकी डॉलर था जिसमें से

सारणी 15 : भारत को निजी अंतरणों की प्रवृत्ति और संरचना

(बिलियन अमरीकी डालर)

वर्ष	परिवार की देखभाल के लिए आवक प्रेषण	स्थानीय आहरण / एनआरआई जमाओं से चुकौती	यात्री सामान के माध्यम से लाया गया स्वर्ण तथा चांदी	भारत में धर्मदाय / धार्मिक संस्थाओं को वैयक्तिक उपहार/ दान	कुल
1	2	3	4	5	6
1999-00	7,423	4,120	13	734	12,290
2000-01	7,747	4,727	10	581	13,065
2001-02	6,578	8,546	13	623	15,760
2002-03	9,914	6,644	18	613	17,189
2003-04	10,379	10,585	19	1,199	22,182
2004-05	9,973	8,907	27	2,168	21,075
2005-06	10,455	12,454	16	2,026	24,951
2006-07	13,561	13,208	27	2,155	28,951
2007-08 (अप्रैल-सितं.)	9,434	8,300	17	1,241	18,992
2006-07 (अप्रैल-सितं.)	6,607	5,123	11	992	12,733

5.5 बिलियन अमरीकी डॉलर पारिवारिक भरण-पोषण के लिए था। पारिवारिक भरण-पोषण के लिए कुल विप्रेषण अंतर्वाहों में उच्च मूल्य लेन-देन का हिस्सा (1.2 बिलियन अमरीकी डॉलर) अपेक्षाकृत छोटा (लगभग 20 प्रतिशत) है। इस प्रकार, ऐसे विप्रेषण अनिवासी भारतीयों द्वारा अपने परिवारों के लिए मुख्यतः कम मूल्य लेन-देन हैं और वे स्थायी प्रवाह हैं।

III.2.1. 2.2 अनिवासी रुपया जमा योजनाओं से स्थानीय आहरण

कामगार विप्रेषणों के एक भाग के रूप में अनिवासी रुपया जमा योजनाओं से स्थानीय आहरण अनिवासी (बाह्य) रुपया खाता [एनआर(ई)आरए] और अनिवासी सामान्य (एनआरओ) रुपया खाता आहरण हैं जो अनिवासियों अथवा उनके आश्रितों द्वारा स्थानीय उपयोग के लिए हैं। वर्ष 2003-04 से भारत को विप्रेषण अंतर्वाहों के माध्यम के रूप में स्थानीय आहरणों का महत्त्व अपेक्षाकृत बढ़ता रहा है। यद्यपि कुल निजी अंतरणों में स्थानीय आहरणों का औसत हिस्सा वर्ष 1990 के दशक के प्रथमार्ध में 50 प्रतिशत से घटकर वर्ष 1990 दशक के उत्तरार्ध में केवल 29 प्रतिशत रह गया जो इस प्रवृत्ति में हाल की अवधि में विपर्यय का द्योतक है। पारिवारिक भरण-पोषण और बचत के प्रत्यक्ष विप्रेषणों के माध्यमों से अधिक अनिवासी रुपया जमाराशि योजनाओं से स्थानीय आहरण की प्रवृत्ति 2005-06 और 2006-07 में देखी गई (सारणी 16) क्योंकि आइएमडी के शोधन का एक बड़ा भाग रुपया जमाराशियों के रूप में भारत को प्रत्यावर्तित किया गया जिसे बाद में स्थानीय मुद्रा में आहरित किया गया। अनिवासी जमाराशियों में सकल अंतर्वाह और स्थानीय आहरणों की तेज प्रवृत्ति यह संकेत देती है कि विप्रेषण अंतर्वाह मध्यावधि के दौरान जारी रह सकते हैं (बॉक्स 7)।

III.2.1 2.3 यात्री सामानों के माध्यम से लाए गए स्वर्ण और चांदी

आयात के लिए उदारीकृत नीति के अंतर्गत भारत सरकार ने आभूषण विनिर्माताओं, निर्यातकों, अनिवासी भारतीयों, विशेष आयात लाइसेन्स धारकों तथा घरेलू उपयोगकर्ताओं को विक्रय के लिए कुछ नामित एजेंसियों को स्वर्ण के आयात की अनुमति प्रदान की। नामित एजेंसियों/बैंकों को अनुमति दी गई कि वे आपूर्तिकर्ता/क्रेता ऋण आधार, परेषण आधार और सीधे क्रय आधार जैसी विभिन्न व्यवस्थाओं के अंतर्गत स्वर्ण का आयात कर सकते हैं। इस प्रकार वर्ष 1997-98 के बाद लौटनेवाले भारतीयों द्वारा यात्री सामानों के माध्यम से स्वर्ण के आयात

सारणी 16 : एनआरआइ जमाओं और स्थानीय आहरणों से अन्तर्वाह और बहिर्वाह

(मिलियन अमरीकी डालर)

वर्ष	अन्तर्वाह	बहिर्वाह	स्थानीय आहरण
1	2	3	4
1999-00	7,405	5,865	4,120
2000-01	8,988	6,672	4,727
2001-02	11,435	8,681	8,546
2002-03	10,214	7,236	6,644
2003-04	14,281	10,639	10,585
2004-05	8,071	9,035	8,907
2005-06	17,835	15,046	12,454
2006-07	19,914	15,593	13,208
2007-08(अप्रैल-सितं.)	10,768	10,846	8,300
2006-07(अप्रैल-सितं.)	8,431	6,221	5,123

ने विप्रेषण प्रवाहों के माध्यम के रूप में अपना महत्त्व खो दिया।

III. 2.1.2.4 धर्मादाय/धार्मिक संस्थाओं को वैयक्तिक उपहार/दान

हाल के वर्षों में इस माध्यम के अंतर्गत अंतर्वाहों में वृद्धि हुई है । प्रत्यावर्तित राशि प्रधानतः धर्मादाय/धार्मिक संस्थाओं/गैर-सरकारी संगठनों को दान के रूप में है।

III.2.1.3 विप्रेषण संबंधी विभिन्न देशों की स्थिति

हाल के वर्षों में कामगारों के विप्रेषणों में, विशेष रूप से विकासशील देशों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विप्रेषण प्रवासियों को कठिनाई के समय में सुरक्षा प्रदान करता है तथा इस प्रकार का अंतर्वाह सामान्यतः आधिकारिक सहायता अंतर्वाह से जुड़ी समस्याओं से परे होता है। उपलब्ध अनुमानों के अनुसार वर्ष 2007 में आधिकारिक रूप में विकासशील देशों में श्रमिकों द्वारा विप्रेषित राशि 240 बिलियन अमरीकी डालर हो जाने का अनुमान है जो 2006 के 221 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक तथा 2002 से दुगुनी है। अनुमान है कि 2007 में भारत और मैक्सिको विप्रेषण प्राप्त करने वाले दो प्रमुख देश हो जाएंगे जो विकासशील देशों को प्राप्त होनेवाले विप्रेषणों का एक-तिहाई हिस्सा होगा। भारत में 2006-07 में विप्रेषण का हिस्सा जीडीपी का 3.2 प्रतिशत था। वर्ष 2005 में निम्न आय वाले देशों में जीडीपी के प्रतिशत के रूप में विप्रेषण का हिस्सा 3.5 प्रतिशत था जबकि मध्यम आय वाले देशों में यह हिस्सा 1.5 प्रतिशत था (विश्व बैंक, 2007)। अनेक गरीब

बॉक्स 7 : विप्रेषण में वृद्धि और स्थानीय आहरण

अनिवासी (बाह्य) रुपया खाता [एनआर(ई)आरए] और अनिवासी साधारण (एनआरओ) रुपया खाता में यह सुविधा है कि इनकी जमाराशि का आहरण अनिवासी भारतीय अथवा उसके परिवार के आश्रित सदस्यों द्वारा किया जा सकता है। इन जमा खातों में प्राप्त राशि बाद में स्थानीय रूप में आहरित की जाती है जो कामगार के विप्रेषण का हिस्सा होता है। यह देखा गया है कि दो श्रेणियों के अनिवासी भारतीय अनिवासी भारतीय जमा खाता रखते हैं - (क) वे जो भारत लौटकर आना चाहते हैं और (ख) वे अन्य जो विदेश में रह जाना चाहते हैं। स्थानीय आहरण का हिस्सा पहली श्रेणी के लिए महत्वपूर्ण होता है। दूसरी बात यह कि सुरक्षा और लागत अनिवासी जमा खाते के माध्यम से विप्रेषण के प्रत्यावर्तन के महत्वपूर्ण विचारणीय विषय हैं। इस प्रकार एनआर(ई)आरए तथा एनआरओ जमा खातों की राशि घरेलू निवेश हेतु आश्रितों द्वारा स्थानीय रूप में शीघ्र आहरित कर ली जाती है।

वर्ष 2003-04 से भारत में विप्रेषणों के प्रवाह के उपाय के रूप में स्थानीय आहरण माध्यम का महत्व तुलनात्मक रूप में बढ़ रहा है। यद्यपि कुल निजी अंतरण में स्थानीय आहरण का औसत हिस्सा 1990 के दशक के पूर्वार्ध के 50 प्रतिशत से घटकर उसके उत्तरार्ध में 29 प्रतिशत हो गया फिर भी हाल में इस प्रवृत्ति में बदलाव परिलक्षित हो रहा है। निजी अंतरणों में स्थानीय आहरण का औसतन हिस्सा, 2000-01 से 2006-07 के दौरान बढ़कर फिर से लगभग 45 प्रतिशत हो गया।

पिछले कुछ वर्षों में स्थानीय आहरण में वृद्धि की प्रवृत्ति के कारण ये रहे हैं - प्रवासी के आय का स्तर, एनआरई जमा खातों के जरिए धन के अंतरण में आसानी तथा स्थानीय निवेश के अवसरों में वृद्धि। यह उल्लेखनीय है कि इनआरआइ जमा खातों से बहिर्वाह का प्रमुख हिस्सा (कुल बहिर्वाह का औसतन 85 प्रतिशत) इन खातों से स्थानीय आहरण के रूप में होता है। यह राशि विदेश में प्रत्यावर्तित न करके इनका उपयोग स्थानीय रूप में किया जाता है। इसके अतिरिक्त, घरेलू स्तर पर निवेश के बेहतर अवसरों तथा ब्याज की उच्चतर दरों को देखते हुए यह संभावना है कि स्थानीय आहरण के माध्यम से निधि का अंतर्वाह जारी रहेगा। अतः ऐसी स्थिति में स्थानीय आहरण का मुद्दा महत्वपूर्ण हो जाता है।

देशों में विप्रेषण बाह्य वित्तपोषण का सबसे बड़ा स्रोत है। साथ ही, विकासशील देशों में विदेशी मुद्रा अर्जन के अन्य स्रोतों की तुलना में विप्रेषण एक ऐसा स्रोत है जिसकी मात्रा में कम उतार-चढ़ाव होता है (विश्व बैंक, 2006)। विकासशील देशों में विप्रेषणों के प्रवाह की देशवार तुलना से यह स्पष्ट होता है कि भारत विश्व में विप्रेषण प्राप्त करने वाला एक ऐसा प्रमुख देश है जिसके विप्रेषण प्रवाह में तुलनात्मक रूप में स्थिरता रही है (सारणी 17)।

III.3 निवेश आय

निवेश आय प्राप्तियों में मुख्यतः विदेशी मुद्रा भंडार के भारतीय रिज़र्व बैंक के निवेश से प्राप्त ब्याज तथा बट्टा आय, विदेश में निवेश करने वाली भारतीय कंपनियों की पुनर्निवेशित आय तथा विदेशी निवेश पर भारतीय कंपनियों को प्राप्त लाभ शामिल हैं। निवेश आय प्राप्तियों में विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि के चलते 1990 के दशक के उत्तरार्ध से उल्लेखनीय वृद्धि हुई (सारणी 18)। पुनर्निवेशित आय में वृद्धि विदेशी बाजारों तक पहुंच, प्राकृतिक संसाधनों, वितरण नेटवर्क, विदेशी प्रौद्योगिकी तथा ब्रांड नाम जैसे अन्य रणनीतिगत आस्तियों का लाभ उठाने हेतु भारतीय कंपनियों द्वारा विदेश में निवेश की बढ़ती प्रवृत्ति को दर्शाता है।

निवेश आय भुगतानों में मुख्यतः बाह्य वाणिज्यिक उधारों (ईसीबी) बाह्य सहायता, अनिवासी जमाराशि तथा अन्य अल्पावधि देयताओं पर ब्याज का भुगतान शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, इसमें विदेशी प्रत्यक्ष निवेश तथा पोर्टफोलियो निवेश तथा भारत में परिचालन करने वाले विदेशी प्रत्यक्ष निवेश उद्यमों की पुनर्निवेशित आय जैसी देयताओं पर लाभांश तथा लाभ भुगतान शामिल होता है।

ब्याज का भुगतान ऋण की मात्रा तथा ब्याज दर वातावरण पर निर्भर करता है जबकि पुनर्निवेशित आय का भुगतान भारत में परिचालन करने वाले विदेशी प्रत्यक्ष निवेश उद्यमों की लाभप्रदता तथा पुनर्निवेश निर्णयों से प्रभावित होता है। 2000-01 से निवेश आय भुगतान

सारणी 17 : कामगारों के विप्रेषण - विप्रेषण प्राप्त करने वाले दस शीर्ष देश

(मिलियन अमरीकी डालर)

क्रम सं.	देश	1996	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6
1	**भारत***	**8,453**	**20,012**	**23,518**	**27,607**
2	मैक्सिको	4,224	16,613	20,035	23,054
3	फिलीपीन्स	569	8,617	10,668	12,481
4	चीन	1,672	4,627	5,495	6,830
5	स्पेन	2,749	5,196	5,339	6,057
6	इंडोनेशिया	796	1,700	5,296	5,560
7	रोमानिया	10	18	3,754	5,506
8	मोरक्को	2,165	4,221	4,589	5,454
9	मिश्र	3,107	3,341	5,017	5,330
10	पाकिस्तान	1,284	3,943	4,277	5,113

स्रोत : भुगतान संतुलन सांख्यिकी ईयर बुक, आइएमएफ ।

* भारिबैं के मासिक बुलेटिन में प्रकाशित भारत के भुगतान संतुलन के आंकड़ों से लिया गया ।

सारणी 18 : निवेश आय

(मिलियन अमरीकी डालर)

वर्ष	प्राप्तियां	भुगतान	निवल
1	2	3	4
1990-91	368	4,120	-3,752
1995-96	1,429	4,634	-3,205
1999-00	1,783	5,478	-3,695
2000-01	2,554	7,218	-4,664
2001-02	3,254	7,098	-3,844
2002-03	3,405	6,370	--2,965
2003-04	3,774	7,531	-3,757
2004-05	4,124	8,219	-4,095
2005-06	6,229	11,491*	-5,262
2006-07	8,908	14,926	-6,018
2007-08 (अप्रैल-सितं.)	6,142	7,383	-1,241
2006-07(अप्रैल-सितं.)	3,816	6,851	-3,035

*अन्य बातों के साथ - साथ, इंडिया मिलेनियम डिपॉजिट (आइएमडी) के ब्याज भुगतानों (1,718 मिलियन अमरीकी डालर) को शामिल किया गया है ।

के स्तर में आया बदलाव अंशतः अंतर्राष्ट्रीय श्रेष्ठ प्रथाओं के अनुसरण में भारत में एफडीआइ आय के रिकार्ड हेतु निर्धारित संशोधित प्रक्रिया के अनुसार एफडीआई उद्यमों के पुनर्निवेशित आय का समावेशन प्रतिबिंबित करता है। निवेश आय की प्राप्तियों और भुगतानों के ब्यौरे सारणी 18 में दिए गए हैं।

यद्यपि निवेश आय प्राप्ति तथा भुगतान दोनों में बढ़ोतरी हो रही है, फिर भी निवेश आय भुगतान निवेश आय प्राप्तियों से अधिक होने के कारण निवेश आय में निवल आधार पर घाटा हुआ है। वर्ष 2006-07 के दौरान निवल निवेश आय घाटा 6.0 बिलियन अमरीकी डॉलर था जबकि 2005-06 में यह घाटा 5.3 बिलियन अमरीकी डॉलर था। निवेश आय प्राप्ति में मुख्यतः विदेशी मुद्रा भंडार पर ब्याज की प्राप्ति, पुनर्निवेशित आय पर लाभांश तथा लाभ के चलते हुई, जबकि निवेश आय भुगतान में वृद्धि मुख्यतः पुनर्निवशित आय और लाभांश तथा लाभ के कारण हुई (सारणी 19)।

IV. नीतिगत पहल

IV.1 सेवाओं में व्यापार

सेवा निर्यात को बढ़ावा देने के लिए किए गए उपायों में भारत सरकार द्वारा सेवा निर्यात संवर्धन परिषद का गठन किया गया है जिसका लक्ष्य है : (i) प्रमुख बाजारों में प्रमुख सेवाओं का निर्धारण तथा मैट्रिक्स के प्रत्येक घटक के लिए रणनीतिगत बाजार पहुंच कार्यक्रम विकसित करना, (ii) लक्षित बाजारों में गहन ब्रांड निर्माण तथा मार्केटिंग कार्यक्रम चलाने के लिए क्षेत्रगत खिलाड़ियों के साथ समन्वयन करना, (iii) सेवा उद्योग की मान्यताप्राप्त प्रमुख संस्थाओं के समन्वयन से नीति, प्रक्रिया तथा द्विपक्षीय/बहुपक्षीय मुद्दों के निराकरण के लिए आवश्यक हस्तक्षेप करना।

विदेश व्यापार नीति (2004-09) में भारत सरकार ने घोषणा की है कि वह विशेष रूप से इंजीनियरिंग, आर्किटेक्चरल डिजाइन, मल्टीमीडिया परिचालन तथा साफ्टवेयर विकासकों जैसे क्षेत्र में गृह आधारित सेवा

प्रदाताओं के उपयोग के लिए राज्य और जिला स्तरीय कस्बों में सामान्य सुविधा केंद्रों की स्थापना को बढ़ावा देगी। इससे गृह आधारित बहुसंख्यक प्रोफेशनलों को सेवा निर्यात के क्षेत्र में आगे बढ़ने में सहायता मिलेगी। लक्ष्य यह है कि सेवाओं के निर्यात में वृद्धि की जाए ताकि 'भारत से सेवा' के रूप में शक्तिशाली और अनन्य ब्रांड का निर्माण किया जा सके। हैंडबुक ऑफ प्रोसीजर्स में सूचीबद्ध सेवाओं के ऐसे सेवा प्रदाता ड्यूटी क्रेडिट स्क्रिप के लिए पात्र होंगे जिनकी कुल विदेशी मुद्रा आय अथवा भारतीय मुद्रा में आय पिछले अथवा चालू वित्तीय वर्ष में कम से कम 10 लाख रु. रही हो तथा जिन्हें भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अन्यथा मुक्त विदेशी मुद्रा में भुगतान किया गया माना गया हो। हैंडबुक ऑफ प्रोसीजर्स में सूचीबद्ध, हेल्थ केयर तथा शैक्षणिक सेवा प्रदाताओं, इंजीनियरिंग प्रोसेस आउटसोर्सिंग (ईपीओ) तथा नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग (केपीओ) सेवा प्रदाता सहित सभी सेवा प्रदाता ड्यूटी क्रेडिट स्क्रिप के लिए हकदार होंगे और यह राशि उनके द्वारा पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान अर्जित विदेशी मुद्रा के 10 प्रतिशत के बराबर होगी।

श्रेणी -I प्राथमिक व्यापारी बैंकों को अनुमति दी गई कि वे भारत में बीपीओ कंपनियों को आयात करके विदेश स्थित उनकी साइट में लगाए जाने वाले उपकरणों की लागत विप्रेषित करने की अनुमति दे सकते हैं। इसके लिए निम्नलिखित शर्तें निर्धारित की गई हैं : (i) बीपीओ कंपनी को अंतरराष्ट्रीय कॉल सेंटर की स्थापना के लिए

सारणी 19 : निवेश आय की प्राप्तियों और भुगतानों के ब्यौरे

(मिलियन अमरीकी डालर)

मद	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
1	2	3	4	5	6	7	8
	निवेश आय प्राप्तियां						
1. अनिवासियों को दिए गए ऋणों पर ब्याज प्राप्तियां	84	201	154	198	65	101	159
2. लाभांश और लाभ	11	57	34	40	92	225	464
3. पुनर्निवेश आय	340	700	1,104	552	248	1,092	1,076
4. ब्याज / छूट रिज़र्व बैंक के निवेश पर आय	1,950	1,757	1,835	2,115	3,014	4,519	6,640
5. अन्य	169	539	278	869	705	292	569
6. कुल प्राप्तियां (1 से 5)	2,554	3,254	3,405	3,774	4,124	6,229	8,908
	निवेश आय भुगतान						
1. एन आर आइ जमाओं पर ब्याज भुगतान	1,811	1,808	1,413	1,642	1,353	1,497	1,971
2. ईसीबी पर ब्याज भुगतान	2,020	1,945	1,486	2,584	1,283	3,148	1,685
3. बाह्य सहायता पर ब्याज भुगतान	827	792	1,111	822	710	825	982
4. अन्य (एसटी) ऋणों / बांडों पर ब्याज	80	80	22	80	400	347	635
5. लाभांश और लाभ	1,047	711	462	878	1,991	2,502	3,485
6. पुनर्निवेश आय	1,350	1645	1,832	1,459	1,903	2,760	5,091
7. अन्य	83	117	44	66	579	412	1,077
8. कुल भुगतान (1 से 7)	7,218	7,098	6,370	7,531	8,219	11,491	14,926

भारत सरकार के संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा अन्य संबंधित प्राधिकारियों से आवश्यक अनुमोदन प्राप्त कर लेना होगा; (ii) विप्रेषण सीधे विदेश स्थित आपूर्तिकर्ता के खाते में किया जाएगा; तथा (iii) आयात की पुष्टि के साक्ष्य के रूप में आयातकर्ता कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) अथवा लेखा परीक्षक का इस आशय का प्रमाण पत्र प्राप्त करना होगा कि जिस वस्तु के आयात के लिए विप्रेषण किया गया है वह वस्तु आयात करके विदेश स्थित साइट पर वास्तव में लगा ली गई है।

सेवा क्षेत्र को समुचित दिशा देने, उनका मार्गदर्शन करने तथा उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने इस संबंध में गठित कार्य बल की सिफारिश पर एक विशेष सेवा निर्यात संवर्धन परिषद (एसईपीसी) गठित करने की घोषणा की है। सरकार ने प्रारंभ में निम्नलिखित 11 सेवा क्षेत्रों की पहचान की है जिन्हें एसईपीसी के जरिए समर्थन दिया जाएगा। इनमें शामिल क्षेत्र हैं - हेल्थकेयर सेवा; शैक्षणिक सेवा; मनोरंजन सेवा; परामर्शी सेवा; आर्किटेक्चरल सेवा/इंटेरियर डेकोरेशन; वितरण सेवा; लेखांकन/लेखा परीक्षा तथा बही खाता पद्धति; समुद्री यातायात सेवा; विपणन अनुसंधान एवं प्रबंधन सेवा, छपाई और प्रकाशन सेवा तथा विधि सेवा।

IV.2. विदेश स्थित भारतीयों से विप्रेषण

विप्रेषणों को सुविधाजनक बनाने के लिए पूर्व में कई उपाय किए जा चुके हैं । इनमें बाजार आधारित विनिमय दर, चालू खाता परिवर्तनीयता [2], विप्रेषण सेवाओं तक पहुंच को व्यापक बनाने के लिए संस्थागत विकास को बढ़ावा देने हेतु विनियामक उपाय, त्वरित तथा कम लागत वाली धन अंतरण व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत पहल शामिल हैं।

हाल ही में विप्रेषण प्राप्त करने के लिए समर्थनकारी ढांचे के विकास के लिए कतिपय उपाय किए गए हैं। इस समय भारत में प्राप्त होने वाला अधिकांश विप्रेषण बैंकिंग माध्यमों से होता है। दो योजनाएं, यथा धन अंतरण सेवा योजना (एमटीएसएस) तथा रुपया आहरण व्यवस्था (आरडीए) धन अंतरण की तीव्र गति तथा परिचालन की सहजता के चलते हाल में काफी लोकप्रिय हुई हैं (सारणी 20क तथा सारणी 20ख)।

एमटीएसएस के अंतर्गत केवल निजी अंतरण किए जा सकते हैं, जैसे कि परिवार के भरण-पोषण के लिए विप्रेषण तथा भारत आने वाले पर्यटकों के पक्ष में अंतरण। इस प्रणाली में धन अंतरण हेतु विदेश स्थित प्रतिष्ठित धन अंतरण कंपनी तथा भारत स्थित एजेंट के बीच समझौता होना अपेक्षित है। प्राधिकृत व्यापारी, संपूर्ण मुद्रा परिवर्तन (एफएफएमसी), पंजीकृत गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनी अथवा अंतरराष्ट्रीय हवाई यातायात एसोशिएशन (आइएटीए) अनुमोदित ट्रवेल एजेंट भारत में एजेंट के रूप में कार्य कर सकते हैं बशर्ते उनकी न्यूनतम निवल मालियत 25 लाख रुपए हो। ऐसी व्यवस्था में शामिल होने के लिए भारतीय एजेंट को भारतीय रिजर्व बैंक का अनुमोदन आवश्यक है। 50,000 रुपए तक के विप्रेषण का भुगतान नकद रूप में किया जा सकता है जबकि इससे अधिक राशि का भुगतान/चेक/मांग ड्राफ्ट से करना अनिवार्य है।

रुपया आहरण व्यवस्था (आरडीए) के अंतर्गत आवक विप्रेषण प्राप्त करने के लिए भारत के बैंक खाड़ी क्षेत्रों, सिंगापुर तथा हांगकांग के प्राइवेट एक्सचेंज हाउस आपस में व्यवस्था करते हैं। प्राधिकृत व्यापारियों को एक्सचेंज हाउस के साथ रुपया आहरण व्यवस्था में

[2] ड्यूटी क्रेडिट स्क्रिप को कलपुर्जों, कार्यालय उपस्कर तथा पेशेवर उपस्कर, कार्यालय फर्नीचर और टिकाऊ वस्तुओं सहित किसी पूंजीगत माल के आयात के लिए प्रयोग किया जा सकता है । आयात आवेदक के किसी सेवा क्षेत्र कारोबार से संबंधित होंगे । वित्तीयन योजना के अन्तर्गत अर्जित शुल्क मुक्त क्रेडिट स्क्रिप के उपयोग को पट्टा वित्तीयन के अन्तर्गत पूंजीगत वस्तुओं के आयात के मामले में शुल्क के भुगतान के लिए भी अनुमति दी जाएगी ।

सारणी 20 क : रुपया आहरण व्यवस्था (आर डी ए) के अन्तर्गत प्राप्त विप्रेषण

मिलियन अमरीकी डालर

अवधि	राशि
अक्तूबर-दिसंबर 2005	2,094
जनवरी - मार्च 2006	1,809
अप्रैल - जून 2006	2,216
जुलाई - सितंबर 2006	2,059
अक्तूबर - दिसंबर 2006	1,807
जनवरी - मार्च 2007	2,314
अप्रैल - जून 2007	2,279
जुलाई - सितंबर 2007	3,049

शामिल होने तथा उनके नाम पर वोस्ट्रो एकाउंट खोलने के लिए रिज़र्व बैंक का पूर्व अनुमोदन लेना आवश्यक होता है। इस योजना के अंतर्गत आवक विप्रेषण सामान्यतः उक्त देशों के अनिवासी भारतीयों द्वारा भेजा गया वैयक्तिक विप्रेषण होता है। इस व्यवस्था के अंतर्गत प्रति लेनदेन 2 लाख रुपए तक के व्यापार संबंधी विप्रेषण का निधीयन भी किया जा सकता है। आरडीए के अधीन बैंक नामित डिपॉजिटरी एजेंसी (डीडीए), गैर-नामित डिपॉजिटरी एजेंसी अथवा त्वरित विप्रेषण प्रणाली के अंतर्गत व्यवस्था में शामिल हो सकते हैं। डीडीए प्रक्रिया के अंतर्गत एक्सचेंज हाउस हिताधिकारी को रुपया ड्राफ्ट जारी करता है तथा प्रत्येक दिन की समाप्ति पर कुल आहरण का हिसाब करके अपना दैनिक संग्रहण अगले कार्य दिवस को डीडीए एकाउंट में जमा करता है (यह एकाउंट एक्सचेंज हाउस द्वारा भुगतानकर्ता बैंक के नाम खाला जानेवाला एक नामित एकाउंट है जिसे आपसी सहमति से तय किए गए केंद्र पर भुगतानकर्ता बैंक को स्वीकार्य बैंक में खोला जाता है)। सामान्य स्थिति में इस व्यवस्था के अंतर्गत एक्सचेंज हाउस कोई संपार्श्विक प्रतिभूति नहीं रखता। गैर-डीडीए प्रक्रिया के अंतर्गत एक्सचेंज हाउस दैनिक आहरण की कुल राशि बैंक के नॉस्ट्रो एकाउंट में सीधे जमा कर देता है। इसके अंतर्गत एक माह के अनुमानित आहरण की राशि के बराबर की

सारणी 20 ख : मुद्रा अंतरण सेवा योजना (एम टी एस एस) के अन्तर्गत प्राप्त विप्रेषण

मिलियन अमरीकी डालर

अवधि	राशि
जुलाई - दिसंबर 2005	1,131
जनवरी- दिसंबर 2006	3,090
जनवरी - जून 2007	2,076

संपार्श्विक जमाराशि के लिए आग्रह किया जाता है (15 दिन की नकदी और 15 दिन की बैंक गारंटी)। त्वरित प्रेषण के अंतर्गत एक्सचेंज हाउस बैंक को हिताधिकारी के पूरे विवरण के साथ इलेक्ट्रॉनिक रूप में अनुदेश देता हे और भुगतान अनुदेश जारी करने से काफी पहले बैंक के नॉस्ट्रो एकाउंट के जरिए उनके रुपया एकाउंट में राशि जमा कर देता है।

यह उल्लेखनीय है कि प्रवासी भारतीयों तथा उनके विप्रेषणों के महत्व को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने भारतीय मूल के व्यक्ति (पीआइओ) तथा अनिवासी भारतीय (एनआरआइ) सहित विदेश स्थित भारतीयों के हितों पर ध्यान देने के लिए प्रवासी भारतीय मंत्रालय की स्थापना की है। मंत्रालय का यह भी लक्ष्य है कि प्रवासी भारतीयों के निवेश का संवर्धन किया जाए। इनमें सरकार की समग्र नीति के अनुरूप नवोन्मेषी निवेश सहित विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में प्रवासी भारतीयों को निवेश के लिए प्रेरित करना शामिल है।

V. निष्कर्ष

भारत के भुगतान संतुलन की अदृश्य मद लेखा के महत्व को इस तथ्य से आंका जा सकता है कि प्रवासी भारतीयों से विप्रेषण के रूप में वैयक्तिक अंतरण की मात्रा पिछले कुछ वर्षों से स्थिर रूप में प्रवाहित होती रही है जबकि सॉफ्टवेयर सेवा तथा कारोबारी सेवा के निर्यात के चलते सेवा निर्यात में भी निरंतर उछाल बना हुआ है। सेवा निर्यात में कारोबारी सेवाओं का बढ़ता

महत्व भारतीय श्रमबल की उच्चस्तरीय कौशल की प्रधानता को प्रतिबिंबित करता है। भारत एक प्रमुख साफ्टवेयर निर्यातक देश के रूप में उभरा है तथा हाल में वैश्विक स्तर पर आइटी क्षेत्र में आई गिरावट के बावजूद भारत का इस क्षेत्र में वृद्धि दर 30 प्रतिशत से भी अधिक रहा है। प्रवासी भारतीय कामगारों के कौशल में निरंतर अभिवृद्धि के चलते उनके विप्रेषण भी वित्तीय अंतर्वाह का महत्वपूर्ण तथा सुस्थिर स्रोत बने रहने की संभावना है। इस प्रकार, भारत की अदृश्य मद की उल्लेखनीय विशेषता सेवा निर्यात तथा निजी अंतरणों में उछाल रही है। साथ ही, अदृश्य मदों में बदलाव के साथ मात्रा में कम स्थिरता है जिसके चलते चालू प्राप्तियों में स्थिरता आई है। 2006-07 में निवल अदृश्य मद (प्राप्ति से भुगतान घटाकर) ने भारत के पण्य व्यापार घाटे के लगभग 85 प्रतिशत हिस्से का वित्तपोषण किया तथा यह राशि चालू खाता प्राप्तियों के 47 प्रतिशत से भी अधिक थी।

विप्रेषण के संबंध में विभिन्न देशों की स्थिति को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि भारत विप्रेषण प्राप्त करने वाला विश्व का प्रमुख देश है और विप्रेषण के ऐसे प्रवाह में तुलनात्मक स्थिरता है। इसके अतिरिक्त, कंप्यूटर और सूचना सेवा के निर्यात में भी हाल के वर्षों में भारत का स्थान प्रथम रहा है। जहां तक सभी सेवाओं के निर्यात की बात है, वर्ष 2006 में सेवा निर्यात करने वाले प्रमुख देशों में भारत का 11 वां स्थान था तथा बाजार में उसकी हिस्सेदारी 2.5 प्रतिशत थी जबकि 1990-91 में यह हिस्सेदारी 0.6 प्रतिशत थी।

सेवाओं के निर्यात की भारत की पूरी क्षमता के उपयोग के लिए कौशल संवर्धन तथा शिक्षा की गुणवत्ता का मुद्दा महत्वपूर्ण हो जाता है। सेवा क्षेत्र की प्रवृत्ति ज्ञान-प्रधान होने के कारण तथा विनिर्माण क्षेत्र की मांग के चलते आने वाले वर्षों में शिक्षा, विशेष रूप से उच्च शिक्षा की मांग में भारी वृद्धि होने की संभावना है। वस्तुओं तथा सेवाओं के व्यापार में सतत वृद्धि की दृष्टि से बाह्य क्षेत्र नीति का फोकस प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने की ओर होना चाहिए (रेड्डी, 2006)।

संदर्भ :

1. अपॉस्टॉलस कुटजिनिस (2005), '' इंटरनेशनल ट्रेड इन बैंकिंग सर्विसेज़ एंड दि रोल ऑफ दि डब्ल्यूटीओः डिस्कसिंग दि लीगत फ्रेमवर्क एंड पॉलिसी ऑब्जेक्टिव्ज ऑफ दि जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड इन सर्विसेज़ एंड दि करेंट स्टेट ऑफ प्ले इन दि दोहा राउंड ऑफ ट्रेड नेगोशिएसन्स' इंटरनेशनल लायर, वोल्यूम 39, सं.4, विंटर 2005।

2. भारत सरकार (2007), एक्सपोर्ट प्रमोशन ऑफ कंसलटेंसी एंड मेनेजमेंट सर्विसेज़ फ्रॉम इंडिया, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय।

3. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (1993) 'मैनुअल ऑन बैलेंस ऑफ पेमेंट स्टेटिस्टिक्स', 5वां संस्करणं

4. नॉस्कॉम (2007), 'स्ट्रेटेजिक रिव्यू 2007 - दि आइटी इंडस्ट्री इन इंडिया' फरवरी।

5. नॉस्कॉम (2006), ग्लोबलाइजेशन ऑफ इंजीनियरिंग सर्विसेज़ - दि नेक्स्ट फ्रॉन्टियर फॉर इंडिया' अगस्त, अनुसंधान रिपोर्ट।

6. प्रसाद, एच.ए.सी (2007), 'स्ट्रेटेजी फॉर इंडियाज सर्विसेज़ सेक्टर : ब्रॉड कंटूअर्स वर्किंग पेपर सं.1/2007-डीईए/वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।

7. रेड्डी, वाइ.वी (2007), 'डाइनॉमिक्स ऑफ बैलेंस ऑफ पेमेंट्स इन इंडिया, ' उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद के वाणिज्य विभाग के हीरक जयंती समारोह के उद्घाटन के अवसर पर 16 दिसंबर को दिया गया व्याख्यान।

8. भारतीय रिज़र्व बैंक (2007), 'रिपोर्ट ऑफ दि टेक्निकल ग्रुप ऑन स्टेटिस्टिक्स फॉर इंटरनेशनल ट्रेड इन बैंकिंग सर्विसेज़ ।

9. रथ, दिलीप, संकेत महापात्र, के.एम.विजयलक्ष्मी, झिमेई जू (2007), डेवलपमेंट प्रॉस्पेक्ट्स ग्रुप, माइग्रेशन एंड रेमिटेंस टीम, वर्ल्ड बैंक, नवंबर।

10. यूनाइटेड नेशन्स (2002), 'मैनुअल ऑन स्टेटिस्टिक्स ऑफ इंटरनेशनल ट्रेड इन सर्विसेज़'।

11. वर्ल्ड बैंक (2007), 'ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनांस - दि ग्लोबलाइजेशन ऑफ कॉर्पोरेट फाइनांस इन डेवेलॅपिंग कन्ट्रीज़' मई।

विवरण 1 : श्रेणीवार अदृश्य मद वस्तुएं

(मिलियन अमरीकी डालर)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
I. अदृश्य मद प्राप्तियां (क+ख+ग)	**30,312**	**32,267**	**36,737**	**41,925**	**53,508**	**69,533**	**89,687**	**115,074**
क. सेवाएं	**15,709**	**16,268**	**17,140**	**20,763**	**26,868**	**43,249**	**57,659**	**76,181**
1) यात्रा	3,036	3,497	3,137	3,312	5,037	6,666	7,853	9,123
2) परिवहन	1,707	2,046	2,161	2,536	3,207	4,683	6,325	8,050
3) बीमा	231	270	288	369	419	870	1,062	1,202
4) जीएनआइई	582	651	518	293	240	401	314	250
5) विविध	10,153	9,804	11,036	14,253	17,965	30,629	42,105	57,556
ख. अंतरण	**12,672**	**13,317**	**16,218**	**17,640**	**22,736**	**21,691**	**25,620**	**29,589**
1) अधिकारिक अतंरण	382	252	458	451	554	616	669	638
2) निजी अंतरण	12,290	13,065	15,760	17,189	22,182	21,075	24,951	28,951
ग. आय	**1,931**	**2,682**	**3,379**	**3,522**	**3,904**	**4,593**	**6,408**	**9,304**
1) निवेश- आय	1,783	2,554	3,254	3,405	3,774	4,124	6,229	8,908
2) कर्मचारियों को वेतन	148	128	125	117	130	469	179	396
II. अदृश्य मद भुगतान (क+ख+ग)	**17,169**	**22,473**	**21,763**	**24,890**	**25,707**	**38,301**	**47,685**	**61,669**
क. सेवाएं	**11,645**	**14,576**	**13,816**	**17,120**	**16,724**	**27,823**	**34,489**	**44,371**
1) यात्रा	2,139	2,804	3,014	3,341	3,602	5,249	6,638	6,685
2) परिवहन	2,410	3,558	3,467	3,272	2,328	4,539	8,337	8,068
3) बीमा	122	223	280	350	363	722	1,116	642
4) जीएनआइई	270	319	283	228	212	411	529	403
5) विविध	6,704	7,672	6,772	9,929	10,219	16,902	17,869	28,573
ख. अंतरण	**34**	**211**	**362**	**802**	**574**	**906**	**933**	**1,421**
1) अधिकारिक अतंरण	0	0	0	0	0	356	475	411
2) निजी अंतरण	34	211	362	802	574	550	458	1,010
ग. आय	**5,490**	**7,686**	**7,585**	**6,968**	**8,409**	**9,572**	**12,263**	**15,877**
1) निवेश- आय	5,478	7,218	7,098	6,370	7,531	8,219	11,491	14,926
2) कर्मचारियों को वेतन	12	468	487	598	878	1,353	772	951
निवल अदृश्य मदें (I-II)	**13,143**	**9,794**	**14,974**	**17,035**	**27,801**	**31,232**	**42,002**	**53,405**

आं.सं. : आंशिक संशोधन

विवरण 2 : लेनदेनों की श्रेणी-वार अदृश्य मद प्राप्तियां

(मिलियन अमरीकी डालर)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
अदृश्य मद प्राप्तियां (क+ख+ग)	**30,312**	**32,267**	**36,737**	**41,925**	**53,508**	**69,533**	**89,687**	**115,074**
क. सेवाएं (1 से 5)	**15,709**	**16,268**	**17,140**	**20,763**	**26,868**	**43,249**	**57,659**	**76,181**
1) यात्रा खाता								
i) भारत में पर्यटन का व्यय	3,036	3,497	3,137	3,312	5,037	6,666	7,853	9,123
कुल	**3,036**	**3,497**	**3,137**	**3,312**	**5,037**	**6,666**	**7,853**	**9,123**
2) परिवहन खाता								
क) समुद्री परिवहन								
i) विदेशों में परिचालित भारतीय कंपनियों द्वारा विप्रेषित अधिशेष	61	34	71	50	36	208	451	461
ii) भारत में विदेशी कंपनियों का परिचालन व्यय	161	87	103	145	289	462	638	966
iii) चार्टर किराया प्रभार	42	99	85	83	94	48	144	98
ख) हवाई परिवहन								
i) विदेशों में परिचालित भारतीय कंपनियों द्वारा विप्रेषित अधिशेष	180	185	154	170	97	130	200	317
ii) भारत में विदेशी कंपनियों का परिचालन व्यय	20	22	10	5	18	107	37	83
iii) चार्टर किराया प्रभार	24	4	18	5	18	20	21	35
ग) निर्यातों पर भाड़ा	1,065	1,458	1,476	1,815	2,470	3,660	4,407	5,481
घ) अन्य	154	157	244	263	185	48	427	609
कुल (क से घ)	**1,707**	**2,046**	**2,161**	**2,536**	**3,207**	**4,683**	**6,325**	**8,050**
3) बीमा खाता								
क) निर्यात बीमा	192	243	247	303	373	478	575	717
ख) प्रीमियम								
i) जीवन	1	1	5	21	0	25	37	64
ii) जीवनेतर	7	5	8	6	12	289	78	113
iii) विदेशी कंपनियों से पुनर्बीमा	10	4	8	16	9	19	200	82
ग) विदेशी कंपनियों से प्राप्त कारोबार पर कमीशन	0	2	4	4	5	29	85	79
घ) अन्य	21	15	16	19	20	30	87	147
कुल (क से घ)	**231**	**270**	**288**	**369**	**419**	**870**	**1,062**	**1,202**
4) सरकार जिसे अन्यत्र शामिल नहीं किया गया								
क) भारत में विदेशी दूतावासों और राजनयिक मिशनों का रखरखाव	205	222	195	178	185	229	208	138
ख) भारत में अंतराष्ट्रिय और क्षेत्रीय संस्थाओं का रखरखाव	377	429	323	115	55	172	106	112
कुल (क से ख)	**582**	**651**	**518**	**293**	**240**	**401**	**314**	**250**

विवरण 2 : लेनदेनों की श्रेणी-वार अदृश्य मद प्राप्तियां *(जारी)*

(मिलियन अमरीकी डालर)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
5) विविध खाता								
क) संचार सेवाएं	1,064	1,138	752	812	990	1,384	1,575	2,099
ख) निर्माण सेवाएं	389	536	144	178	458	491	242	332
ग) वित्तीय सेवाएं	361	347	292	676	299	512	1,209	2,913
घ) सॉफ्टवेअर सेवाएं	3,962	6,341	7,556	9,600	12,800	17,700	23,600	31,300
जिसमें : आईटी सेवाएं	3,397	5,411	6,061	7,100	9,200	13,100	17,300	22,900
आइटीईएस-बीपीओ	565	930	1,495	2,500	3,600	4,600	6,300	8,400
ङ) समाचार एजेंसी सेवाएं	342	114	9	59	69	171	185	334
च) रायल्टी, कॉपोराइट और लाइसेंस शुल्क	54	60	22	23	32	71	191	97
छ) व्यवसाय सेवाएं (i से xii) $	643	334	519	807	1,296	5,167	9,307	19,266
i) मर्चेंटिंग सेवाएं						278	389	188
ii) व्यापार संबंधी सेवाएं						429	521	939
iii) आपरेशन लीजिंग सेवाएं						28	107	100
iv) विधि सेवाएं						257	277	548
v) लेखांकन/लेखा परीक्षा सेवाएं						38	68	176
vi) कारोबार प्रबंधन तथा परामर्शी सेवाएं	643	334	519	807	1,296	1,556	2,320	7,346
vii) विज्ञापन / ट्रेड फेअर						162	342	666
viii) अनुसंधान तथा विकास सेवाएं						221	395	760
ix) आर्किटेक्चरल, इंजीनियरिंग एवं अन्य तकनीकी सेवाएं						1,417	3,193	6,134
x) कृषि, खनन तथा ऑनसाइट प्रोसेसिंग सेवाएं						52	32	48
xi) विदेश में कार्यालय सेवाओं का रखरखाव						724	1,577	2,334
xii) पर्यावरणीय सेवाएं						5	86	27
ज) वैयक्तिक, सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवाएं						105	189	173
झ) धनवापसी / छूट	53	52	54	44	51	380	75	297
ञ) अन्य सेवाएं	3,285	882	1,688	2,054	1,970	4,648	5,532	745
कुल (क से ञ)	**10,153**	**9,804**	**11,036**	**14,253**	**17,965**	**30,629**	**42,105**	**57,556**
ख) अंतरण	**12,672**	**13,317**	**16,218**	**17,640**	**22,736**	**21,691**	**25,620**	**29,589**
1) सरकारी अंतरण								
i) अनिवासियों से प्राप्त दान	40	85	44	32	90	63	53	65
ii) पीएल 480-II के अंतर्गत प्राप्त अनुदान	96	97	68	58	33	30	38	31
iii) अन्य सरकारों से प्राप्त अनुदान	246	70	346	361	431	523	578	542
कुल (I से III)	**382**	**252**	**458**	**451**	**554**	**616**	**669**	**638**

विवरण 2 : लेनदेनों की श्रेणी-वार अदृश्य मद प्राप्तियां *(समाप्त)*

(मिलियन अमरीकी डालर)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
2) निजी अंतरण								
i) परिवार निर्वाह आदि के लिए विदेश स्थित भारतीय कामगारों से आवक विप्रेषण	7,423	7,747	6,578	9,914	10,379	9,973	10,455	13,561
ii) अनिवासी जमाराशियों से स्थानीय आहरण/प्रतिदान	4,120	4,727	8,546	6,644	10,585	8,907	12,454	13,208
iii) यात्री सामान के माध्यम से लाया गया सोना और चांदी	13	10	13	18	19	27	16	27
iv) भारत में धर्मार्थ/धार्मिक संस्थानो को व्यक्तिगत उपहार/दान	734	581	623	613	1,199	2,168	2,026	2,155
कुल (i से iv)	**12,290**	**13,065**	**15,760**	**17,189**	**22,182**	**21,075**	**24,951**	**28,951**
ग) आय खाता	**1,931**	**2,682**	**3,379**	**3,522**	**3,904**	**4,593**	**6,408**	**9,304**
1) कर्मचारियों को वेतन								
i) विदेशी करारों पर कार्य करनेवाले भारतीय कामगारों द्वारा प्राप्त मजदूरी	148	128	125	117	130	469	179	396
कुल	**148**	**128**	**125**	**117**	**130**	**469**	**179**	**396**
2) निवेश आय								
i) अनिवासियों को ऋणों पर प्राप्त ब्याज	59	84	201	154	198	65	101	159
ii) विदेशी निवेश पर भारतीयों द्वारा प्राप्त लाभांश / लाभ	16	11	57	34	40	92	225	464
जिसमें से :								
विदेशी निवेश पर भारतीयों द्वारा प्राप्त लाभांश ++						44	28	132
विदेशी निवेश पर भारतीयों द्वारा प्राप्त लाभ ++						48	197	332
iii) पुनर्निवेशित आय	0	340	700	1,104	552	248	1,092	1,076
iv) डिबेंचर, एफआरएन, वाणिज्यिक पत्र, मीयादी जमाराशियों पर और विदेशी मुद्रा ऋणों/निर्यात प्राप्तियों की विदेश में रखी राशियों पर प्राधिकृत व्यापारियों को प्राप्त ब्याज	11	18	13	14	31	182	104	64
v) प्राधिकृत व्यापारियों द्वारा विदेशी प्रतिनिधियों/शाखाओं द्वारा वोस्ट्रो खातों के ओवरड्राफ्ट पर ब्याज	10	6	30	40	95	333	110	267
vi) अनिवासियों द्वारा कर-भुगतान/ भारतीयों को विदेशी सरकार द्वारा कर की वापसी	195	70	131	21	157	173	58	225
vii) भारिबैंक निवेश पर ब्याज बट्टा आय	1,383	1,950	1,757	1,835	2,115	3,014	4,519	6,640
viii) एसडीआर धारिताओं पर ब्याज/लाभ	9	8	7	13	10	17	20	13
ix) अन्य	100	67	358	190	576	0	0	0
कुल (i से ix)	**1,783**	**2,554**	**3,254**	**3,405**	**3,774**	**4,124**	**6,229**	**8,908**

सं. : अंशत: संशोधित

$: ऐसे लेनदेन का रिकार्ड रखने के लिए रिपोर्टिंग पद्धति बनाई गई अत: वर्ष 2004-05 से सेवाओं की नई श्रेणियां उपलब्ध है ।

$$: वर्ष 2003-04 तक अन्य में विज्ञापन, किराया, कार्यालय रखरखाव, पुरस्कार, प्रदर्शनी और अन्यत्र शामिल नहीं की गई अन्य सेवाएं शामिल हैं ।

++ : अलग - अलग आंकड़े केवल 2004-05 से उपलब्ध हैं ।

विवरण 3 : लेनदेनों का श्रेणी-वार अदृश्य मद भुगतान

(मिलियन अमरीकी डालर)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
अदृश्य मदों के भुगतान (क+ख+ग)	**17,169**	**22,473**	**21,763**	**24,890**	**25,707**	**38,301**	**47,685**	**61,669**
क) सेवाएं (1 से 5)	**11,645**	**14,576**	**13,816**	**17,120**	**16,724**	**27,823**	**34,489**	**44,371**
1) यात्रा खाता								
i) व्यवसाय	1,268	1,586	1,471	1,987	2,712	3,222	3,452	3,073
ii) स्वास्थ्य संबंधी	3	4	4	4	6	14	38	13
iii) शिक्षा संबंधी	61	95	249	169	237	642	1,114	1,105
iv)बेसिक ट्रैवल कोटा (बीटीक्यू)	379	381	518	796	449	1,164	1,240	1,800
v) तीर्थ यात्रा	137	187	113	125	16	31	27	117
vi) अन्य	291	551	659	260	182	176	767	577
कुल (i से vi)	**2,139**	**2,804**	**3,014**	**3,341**	**3,602**	**5,249**	**6,638**	**6,685**
2) परिवहन खाता								
क. समुद्री परिवहन								
i) भारत में परिचालित विदेशी कंपनियों द्वारा विप्रेषित अधिशेष	387	408	474	330	148	1,009	1,636	2,113
ii) विदेश में भारतीय कंपनियों का परिचालन व्यय	406	831	446	505	364	333	1,005	551
iii) चार्टर किराया प्रभार	116	157	112	111	100	87	83	84
iv) आयातों पर भाड़ा @						876	1,504	1,347
v) निर्यातों पर भाड़ा +						519	581	710
vi) विदेश यात्रा बुक करने के लिए विप्रेषण #						26	12	5
ख. हवाई परिवहन								
i) भारत में परिचालित विदेशी कंपनियों द्वारा विप्रेषित अधिशेष	821	1,236	1,362	1,410	652	1,147	2,194	1,935
ii) विदेश में भारतीय कंपनियों का परिचालन व्यय	134	98	111	112	132	102	286	250
iii) चार्टर किराया प्रभार	75	73	70	82	60	48	141	254
iv) आयातों पर भाड़ा @						118	125	176
v) निर्यातों पर भाड़ा +						59	41	32
vi) विदेश यात्रा बुक करने के लिए विप्रेषण #						31	8	13
ग. आयातों पर भाडा@@	304	647	732	600	763			
घ. विदेश यात्रा बुक करने के लिए विप्रेषण @@	24	12	29	17	11			
ङ.अन्य	143	96	131	105	98	184	721	598
कुल (क से ङ)	**2,410**	**3,558**	**3,467**	**3,272**	**2,328**	**4,539**	**8,337**	**8,068**
3) बीमा खाता								
क. प्रीमियम								
i) जीवन	1	0	0	0	1	10	15	28
ii) जीवनेतर	10	9	25	5	10	336	243	82
iii) पुनर्बीमा	76	180	178	295	266	299	581	382
ख. व्यवसाय पर कमीशन	6	0	3	0	0	12	28	23
ग. अन्य	29	34	74	50	86	65	249	127
कुल (क से ग)	**122**	**223**	**280**	**350**	**363**	**722**	**1,116**	**642**

विवरण 3 : लेनदेनों का श्रेणी-वार अदृश्य मद भुगतान *(जारी)*

(मिलियन अमरीकी डालर)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
4) सरकार जिसे अन्यत्र शामिल नहीं किया गया								
क. विदेश में भारतीय दूतावासों और राजनयिक मिशनों का विप्रेषण	237	262	209	195	186	339	445	285
ख. भारत में विदेशी दूतावासों और मिशनों का रखरखाव	33	57	74	33	26	72	84	118
कुल (क से ख)	**270**	**319**	**283**	**228**	**212**	**411**	**529**	**403**
5) विविध खाता								
क) संचार सेवाएं	190	127	370	965	772	738	289	659
ख) निर्माण सेवाएं	51	166	517	1,326	655	716	723	737
ग) वित्तीय सेवाएं	1,632	1,973	1,264	1,388	700	832	965	2,087
घ) सॉफ्टवेअर सेवाएं	138	591	672	737	476	800	1,338	2,267
ङ) समाचार एजेंसी सेवाएं	90	256	163	232	235	281	130	219
च) रायल्टी, कॉपीराईट और लाइसेंस शुल्क	311	235	361	352	444	712	594	1,038
छ) व्यवसाय सेवाएं (i से xii) $	1,152	1,022	1,501	1,812	2,550	7,318	7,748	17,093
i) मर्चेंटिंग सेवाएं						235	123	224
ii) व्यापार संबंधी सेवाएं						1,052	1,207	1,655
iii) आपरेशन लीजिंग सेवाएं						355	462	865
iv) विधि सेवाएं						73	82	148
v) लेखांकन/लेखा परीक्षा सेवाएं						13	20	58
vi) कारोबार प्रबंधन तथा परामर्शी सेवाएं	795	546	533	648	814	1,279	1,806	5,027
vii) विज्ञापन/व्यापार मेला						514	420	1,737
viii) अनुसंधान और विकास सेवाएं						57	116	201
ix) वास्तुशास्त्रीय, इंजीनियरिंग एवं अन्य तकनीकी सेवाएं						1,111	1,414	3,673
x) कृषि, खनन तथा ऑन साइट प्रोसेसिंग सेवाएं						7	15	74
xi) विदेश में कार्यालय सेवाओं का रखरखाव	357	476	968	1,164	1,736	2,618	2,074	3,424
xii) पर्यावरणीय सेवाएं						4	9	7
ज) वैयक्तिक सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवाएं						102	84	116
झ) धनवापसी / छूट	89	64	150	152	365	762	45	365
ञ) अन्य सेवाएं $$	3,051	3,238	1,774	2,965	4,022	4,641	5,953	3,992
कुल (क से ञ)	**6,704**	**7,672**	**6,772**	**9,929**	**10,219**	**16,902**	**17,869**	**28,573**
ख) अंतरण	**34**	**211**	**362**	**802**	**574**	**906**	**933**	**1,421**
1) सरकारी अंतरण								
i) सरकारी क्षेत्र से प्राप्त अनुदान/दान	0	0	0	0	0	356	475	411
कुल	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**356**	**475**	**411**

विवरण 3 : लेनदेनों की श्रेणी-वार अदृश्य मद का भुगतान *(समाप्त)*

(मिलियन अमरीकी डालर)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
2) निजी अंतरण								
क) परिवार निर्वाह और बचत आदि के लिए अनिवासियों द्वारा विप्रेषण	29	124	292	757	522	421	354	822
ख)धर्मार्थ/धार्मिक संस्थाओं को व्यक्तिगत उपहार/दान	5	87	70	45	52	129	104	188
जिसमें से :								
i) वैयक्तिक उपहार और दान का विप्रेषण ++						108	96	158
ii) विदेश स्थित धर्मार्थ और धार्मिक संस्थानों को दान का विप्रेषण ++						17	7	18
iii) अन्य सरकारों और सरकार द्वारा निर्मित धर्मार्थ संस्थाओं को दान और अनुदान के प्रति विप्रेषण ++						4	1	12
कुल (क से ख)	**34**	**211**	**362**	**802**	**574**	**550**	**458**	**1,010**
ग) आय	**5,490**	**7,686**	**7,585**	**6,968**	**8,409**	**9,572**	**12,263**	**15,877**
क) कर्मचारियों को वेतन								
i) भारत में कार्यरत अनिवासियों को मजदूरी/वेतन का भुगतान	12	468	487	598	878	1,353	772	951
कुल	**12**	**468**	**487**	**598**	**878**	**1,353**	**772**	**951**
ख)निवेश आय								
i) अनिवासी जमाराशियों पर ब्याज का भुगतान	1,742	1,811	1,808	1,413	1,642	1,353	1,497	1,971
ii) अनिवासियों से ऋणों पर ब्याज का भुगतान	3,037	2,930	2,855	2,594	3,469	2,450	4,320	3,501
iii) अनिवासी शेयर धारकों को लाभांश/ लाभ का भुगतान	537	1,047	712	462	878	1,991	2,502	3,485
जिसमें से :								
अनिवासी शेयर धारक को लाभांश का भुगतान ++						1,578	2,400	3,235
अनिवासी शेयर धारक को लाभ का भुगतान ++						413	102	250
iv) पुनर्निवेशित आय		1,352	1,644	1,832	1,460	1,904	2,760	5,091
v) डिबेंचरो, एफआरएन, सीपी, सावधि जमाराशियों आदि पर ब्याज भुगतान	119	60	23	43	42	170	100	39
vi) एसडीआर पर प्रभार	30	16	52	20	16	19	17	30
vii) वोस्ट्रो खाते पर ओवरड्राफ्टो पर अदा किया गया ब्याज नास्ट्रो खाते के ओडी पर ब्याज	0	0	0	4	20	255	212	667
ix) भारतीयों द्वारा करों का भुगतान/ अनिवासियों को सरकार द्वारा कर की वापसी	13	2	4	2	4	77	83	142
कुल (i से ix)	**5,478**	**7,218**	**7,098**	**6,370**	**7,531**	**8,219**	**11,491**	**14,926**

आं.सं. : अंशत: संशोधित
@ : वर्ष 2004-05 से पूर्व अवधि के लिए 'आयात पर माल भाड़े' के संबंध में समुद्री परिवहन एवं हवाई परिवहन के अलग अलग आंकड़े अलग से उपलब्ध नहीं हैं । अतएव. इन्हें 'आयात पर माल भाडा' शीर्ष (मद क (2) (ग) के अंतर्गत शामिल किया गया है ।
\+ डेटा कवरेज को सुधारने के लिए 2004-05 में 'आयात पर माल भाडा' श्रेणी शुरू की गई थी ।
\# वर्ष 2004-05 से पूर्व अवधि के लिए समुद्री परिवहन एवं हवाई परिवहन के अलग-अलग आंकड़े अलग से उपलब्ध नहीं है । अतएव इन्हें 'विदेश यात्रा बुक करने के लिए विप्रेषण (मद क (2) (घ) के अंतर्गत शामिल किया गया है ।
@@ वर्ष 2004-05 से 'समुद्री परिवहन' तथा 'हवाई परिवहन' के शीर्ष के अंतर्गत अलग से प्रस्तुत किया गया ।
$ ऐसे लेनदेन का रिकार्ड रखने के लिए रिपोर्टिंग पद्धति बनाई गई अत: वर्ष 2004-05 से सेवाओं की नई श्रेणियां उपलब्ध हैं ।
$$ वर्ष 2003-04 तक अन्य में विज्ञापन, किराया, कार्यालय रखरखाव, पुरस्कार, प्रदर्शनी और अन्यत्र शामिल नही की गई सेवाएं शामिल हैं।
++ अलग - अलग आंकड़े केवल 2004-05 से उपलब्ध हैं।

विवरण 4 : श्रेणीवार अदृश्य मद वस्तुएं

(करोड़ रुपए में)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
I. अदृश्य मद प्राप्तियां (क+ख+ग)	**1,31,449**	**1,47,778**	**1,75,108**	**2,02,757**	**2,45,413**	**3,11,550**	**3,97,660**	**5,19,425**
क. सेवाएं	**68,137**	**74,555**	**81,739**	**1,00,419**	**1,23,175**	**1,93,711**	**2,55,668**	**3,43,895**
1) यात्रा	13,166	16,064	14,975	15,991	23,054	29,858	34,871	41,127
2) परिवहन	7,400	9,364	10,326	12,261	14,714	21,021	28,023	36,394
3) बीमा	1,004	1,234	1,374	1,783	1,922	3,913	4,694	5,434
4) जीएनआइई	2,523	2,986	2,467	1,417	1,105	1,797	1,396	1,130
5) विविध	44,044	44,907	52,597	68,967	82,380	137,122	186,684	259,810
ख. अंतरण	**54,939**	**60,948**	**77,289**	**85,289**	**1,04,329**	**97,201**	**1,13,566**	**1,33,530**
1) आधिकारिक अतंरण	1,659	1,156	2,197	2,174	2,531	2,762	2,970	2,877
2) निजी अंतरण	53,280	59,792	75,092	83,115	1,01,798	94,439	1,10,596	1,30,653
ग. आय	**8,373**	**12,275**	**16,080**	**17,049**	**17,909**	**20,638**	**28,426**	**42,000**
1) निवेश- आय	7,727	11,690	15,487	16,484	17,314	18,538	27,633	40,218
2) कर्मचारियों को वेतन	646	585	593	565	595	2,100	793	1,782
II. अदृश्य मद भुगतान (क+ख+ग)	**74,421**	**1,02,639**	**1,03,727**	**1,20,400**	**1,18,044**	**1,71,959**	**2,11,733**	**2,78,492**
क. सेवाएं	**50,467**	**66,650**	**65,850**	**82,775**	**76,794**	**1,24,880**	**1,53,057**	**2,00,291**
1) यात्रा	9,268	12,741	14,336	16,155	16,534	23,571	29,432	30,253
2) परिवहन	10,450	16,172	16,486	15,828	10,688	20,363	36,928	36,504
3) बीमा	525	1,004	1,339	1,687	1,672	3,249	4,965	2,903
4) जीएनआइई	1,167	1,460	1,349	1,105	976	1,843	2,343	1,825
5) विविध	29,057	35,273	32,340	48,000	46,924	75,854	79,389	1,28,806
ख. अंतरण	**150**	**981**	**1,729**	**3,886**	**2,633**	**4,066**	**4,134**	**6,423**
1) आधिकारिक अंतरण	2	0	0	0	0	1,598	2,103	1,858
2) निजी अंतरण	148	981	1,729	3,886	2,633	2,468	2,031	4,565
ग. आय	**23,804**	**35,008**	**36,148**	**33,739**	**38,617**	**43,013**	**54,542**	**71,778**
1) निवेश- आय	23,747	32,885	33,830	30,847	34,586	36,947	51,112	67,483
2) कर्मचारियों को वेतन	57	2,123	2,318	2,892	4,031	6,066	3,430	4,295
निवल अदृश्य मदें (I-II)	**57,028**	**45,139**	**71,381**	**82,357**	**1,27,369**	**1,39,591**	**1,85,927**	**2,40,933**

आं.सं. : आंशिक संशोधन

विवरण 5 : लेनदनों की श्रेणी-वार अदृश्य मद प्राप्तियां

(करोड़ रुपए में)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
अदृश्य मद की प्राप्तियां (क+ख+ग)	**1,31,449**	**1,47,778**	**1,75,108**	**2,02,757**	**2,45,413**	**3,11,550**	**3,97,660**	**5,19,425**
क. सेवाएं (1 से 5)	**68,137**	**74,555**	**81,739**	**100,419**	**123,175**	**193,711**	**255,668**	**343,895**
1) यात्रा खाता								
i) भारत में पर्यटन का व्यय	13,166	16,064	14,975	15,991	23,054	29,858	34,871	41,127
कुल	**13,166**	**16,064**	**14,975**	**15,991**	**23,054**	**29,858**	**34,871**	**41,127**
2) परिवहन खाता								
क) समुद्री परिवहन								
i) विदेशों में परिचालित भारतीय कंपनियों द्वारा विप्रेषित अधिशेष	262	157	344	241	170	932	2,000	2,079
ii) भारत में विदेशी कंपनियों का परिचालन व्यय	696	398	495	695	1,325	2,075	2,824	4,371
iii) चार्टर किराया प्रभार	181	453	407	401	433	217	637	440
ख) हवाई परिवहन								
i) विदेशों में परिचालित भारतीय कंपनियों द्वारा विप्रेषित अधिशेष	781	851	739	820	444	589	885	1,435
ii) भारत में विदेशी कंपनियों का परिचालन व्यय	87	94	44	21	84	479	165	375
iii) चार्टर किराया प्रभार	103	19	85	21	81	82	93	155
ग) निर्यातों पर भाड़ा	4,617	6,670	7,053	8,775	11,329	16,445	19,524	24,791
घ) अन्य	673	722	1,159	1,287	848	202	1,895	2,748
कुल (क से घ)	**7,400**	**9,364**	**10,326**	**12,261**	**14,714**	**21,021**	**28,023**	**36,394**
3) बीमा खाता								
क) निर्यात बीमा	832	1,111	1,179	1,466	1,711	2,148	2,548	3,243
ख) प्रीमियम								
i) जीवन	3	4	26	101	3	114	166	294
ii) जीवनेतर	31	24	32	28	54	1,302	346	514
iii) विदेशी कंपनियों से पुनर्बीमा	43	18	40	76	40	87	876	366
ग) विदेशी कंपनियों से प्राप्त कारोबार पर कमीशन	2	7	15	18	23	131	375	358
घ) अन्य	93	70	82	94	91	131	383	659
कुल (क से घ)	**1,004**	**1,234**	**1,374**	**1,783**	**1,922**	**3,913**	**4,694**	**5,434**
4) सरकार जिसे अन्यत्र शामिल नहीं किया गया								
क) भारत में विदेशी दूतावासों और राजनयिक मिशनों का रखरखाव	887	1,019	935	860	850	1,025	923	625
ख) भारत में अंतराष्ट्रिय और क्षेत्रीय संस्थाओं का रखरखाव	1,636	1,967	1,532	557	255	772	473	505
कुल (क से ख)	**2,523**	**2,986**	**2,467**	**1,417**	**1,105**	**1,797**	**1,396**	**1,130**

विवरण 5 : लेनदनों की श्रेणी-वार अदृश्य मद प्राप्तियां *(जारी)*

(करोड़ रुपए में)

Items	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
5) विविध खाता								
क) संचार सेवाएं	4,601	5,262	3,585	3,931	4,535	6,191	7,000	9,506
ख) निर्माण सेवाएं	1,691	2,430	696	863	2,097	2,184	1,074	1,500
ग) वित्तीय सेवाएं	1,569	1,577	1,387	3,276	1,372	2,279	5,355	13,062
घ) सॉफ्टवेअर सेवाएं	17,412	29,013	36,038	46,424	58,781	79,404	1,04,632	1,41,356
जिसमें : आईटी सेवाएं	14,929	24,758	28,908	34,334	42,249	58,768	76,667	1,03,484
आईटीईएस-बीपीओ	2,483	4,255	7,130	12,090	16,532	20,636	27,965	37,872
ङ) समाचार एजेंसी सेवाएं	1,485	511	43	284	321	769	818	1,509
च) रायल्टी, कॉपोराइट और लाइसेंस शुल्क	237	272	104	111	146	316	862	435
छ) व्यवसाय सेवाएं (1 से xii) $	2,790	1,522	2,464	3,890	5,937	23,067	41,356	86,928
i) मर्चेंटिंग सेवाएं						1,248	1,725	850
ii) व्यापार संबंधी सेवाएं						1,923	2,310	4,229
iii) आपरेशन लीजिंग सेवाएं						123	476	450
iv) विधि सेवाएं						1,126	1,230	2,485
v) लेखांकन/लेखा परीक्षा सेवाएं						170	302	796
vi) कारोबार प्रबंधन तथा परामर्शी सेवाएं	2,790	1,522	2,464	3,890	5,937	6,955	10,285	33,107
vii) विज्ञापन / ट्रेड फेअर						726	1,528	2,985
viii) अनुसंधान तथा विकास						985	1,754	3,431
ix) आर्किटेक्चर, इंजीनियरिंग एवं अन्य तकनीकी सेवाएं						6,325	14,163	27,690
x) कृषि, खनन तथा ऑनसाइट प्रोसेसिंग सेवाएं						236	143	218
xi) विदेश में कार्यालय सेवाओं का रखरखाव						3,227	7,051	10,562
xii) पर्यावरणीय सेवाएं						23	389	125
ज) वैयक्तिक, सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवाएं						466	838	780
झ) धनवापसी / छूट	231	238	258	213	234	1,716	332	1,330
ञ) अन्य सेवाएं	14,028	4,082	8,022	9,975	8,957	20,730	24,417	3,404
कुल (क से ञ)	**44,044**	**44,907**	**52,597**	**68,967**	**82,380**	**137,122**	**186,684**	**259,810**
ख) अंतरण	**54,939**	**60,948**	**77,289**	**85,289**	**104,329**	**97,201**	**113,566**	**133,530**
1) सरकारी अंतरण								
i) अनिवासियों से प्राप्त दान	174	393	211	156	413	256	236	295
ii) पीएल 480-II के अंतर्गत प्राप्त अनुदान	414	439	323	280	153	135	169	142
iii) अन्य सरकारों से प्राप्त अनुदान	1,071	324	1,663	1,738	1,965	2,371	2,565	2,440
कुल (I से III)	**1,659**	**1,156**	**2,197**	**2,174**	**2,531**	**2,762**	**2,970**	**2,877**

विवरण 5 : लेनदनों की श्रेणी-वार अदृश्य मद प्राप्तियां *(समाप्त)*

(करोड़ रुपए में)

मद	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
2) निजी अंतरण								
i) परिवार निर्वाह आदि के लिए विदेश स्थित भारतीय कामगारों से आवक विप्रेषण	32,192	35,507	31,361	47,915	47,648	44,559	46,290	61,195
ii) अनिवासी जमाराशियों से स्थानीय आहरण/ प्रतिदान	17,849	21,577	40,654	32,147	48,565	40,105	55,269	59,595
iii) यात्री सामान के माध्यम से लाया गया सोना और चांदी	57	44	61	89	86	118	69	122
iv) भारत में धर्मार्थ/धार्मिक संस्थानो को व्यक्तिगत उपहार/दान	3,182	2,664	3,016	2,964	5,499	9,657	8,968	9,741
कुल (i से iv)	**53,280**	**59,792**	**75,092**	**83,115**	**101,798**	**94,439**	**110,596**	**130,653**
ग) आय खाता	**8,373**	**12,275**	**16,080**	**17,049**	**17,909**	**20,638**	**28,426**	**42,000**
1) कर्मचारियों को वेतन								
i) विदेशी करारों पर कार्य करनेवाले भारतीय कामगारों द्वारा प्राप्त मजदूरी	646	585	593	565	595	2,100	793	1,782
कुल								
2) निवेश आय								
i) अनिवासियों को ऋणों पर प्राप्त ब्याज	256	384	959	745	910	293	449	719
ii) विदेशी निवेश पर भारतीयों द्वारा प्राप्त लाभांश / लाभ	68	54	273	64	184	407	992	2,101
जिसमें से :								
विदेशी निवेश पर भारतीयों द्वारा प्राप्त लाभांश ++						194	122	595
विदेशी निवेश पर भारतीयों द्वारा प्राप्त लाभ ++						213	870	1,506
iii) पुनर्निवेशित आय	0	1,553	3,339	5,342	2,536	1,114	4,835	4,869
iv) डिबेंचर, एफआरएन, वाणिज्यिक पत्र, मीयादी जमाराशियों पर और विदेशी मुद्रा ऋणों/निर्यात प्राप्तियों की विदेश में रखी राशियों पर प्राधिकृत व्यापारियों को प्राप्त ब्याज	50	86	63	69	137	813	453	286
v) प्राधिकृत व्यापारियों द्वारा विदेशी प्रतिनिधियों/शाखाओं द्वारा वोस्ट्रो खातों के ओवरड्राफ्ट पर ब्याज	38	26	3	5	1	1,518	488	1,200
vi) अनिवासियों द्वारा कर-भुगतान/ भारतीयों को विदेशी सरकार द्वारा कर की वापसी	854	313	626	100	720	774	256	1,009
vii) भारिबैंक निवेश पर ब्याज/बट्टा आय	5,992	8,927	8,344	8,885	9,708	13,543	20,070	29,975
viii) एसडीआर धारिताओं पर ब्याज/लाभ	37	35	37	64	46	76	90	59
ix) अन्य	432	312	1,843	1,210	3,072	0	0	0
कुल (i से ix)	**7,727**	**11,690**	**15,487**	**16,484**	**17,314**	**18,538**	**27,633**	**40,218**

आं.सं. : आंशिक रूप से संशोधित
$: ऐसे लेनदेन का रिकार्ड रखने के लिए रिपोर्टिंग पद्धति बनाई गई अतः वर्ष 2004-05 से सेवाओं की नई श्रेणियां उपलब्ध हैं।
$$: वर्ष 2003-04 तक, अन्य में विज्ञापन, किराया, कार्यालय रखरखाव, पुरस्कार, प्रदर्शनी और अन्यत्र शामिल नहीं की गई अन्य सेवाएं शामिल हैं।
++ : अलग-अलग आंकड़े केवल 2004-05से उपलब्ध हैं।

विवरण 6 : लेनदनों का श्रेणी-वार अदृश्य मद भुगतान

(करोड़ रुपए में)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
अदृश्य मदों के भुगतान (क+ख+ग)	**74,421**	**1,02,639**	**1,03,727**	**1,20,400**	**1,18,044**	**1,71,959**	**2,11,733**	**2,78,492**
क) सेवाएं (1 से 5)	**50,467**	**66,650**	**65,850**	**82,775**	**76,794**	**124,880**	**153,057**	**200,291**
1) यात्रा खाता								
i) व्यवसाय	5,490	7,200	7,001	9,617	12,449	14,451	15,296	13,878
ii) स्वास्थ्य संबंधी	13	18	18	18	26	59	167	61
iii) शिक्षा संबंधी	263	435	1,182	818	1,082	2,892	4,921	5,009
iv)बेसिक ट्रैवल कोटा (बीटीक्यू)	1,638	1,738	2,465	3,830	2,063	5,226	5,473	8,154
v) तीर्थ यात्रा	602	867	541	604	72	144	122	527
vi) अन्य	1,262	2,483	3,129	1,268	842	799	3,453	2,624
कुल (i से vi)	**9,268**	**12,741**	**14,336**	**16,155**	**16,534**	**23,571**	**29,432**	**30,253**
2) परिवहन खाता								
क. समुद्री परिवहन								
i) भारत में परिचालित विदेशी कंपनियों द्वारा विप्रेषित अधिशेष	1,681	1,872	2,245	1,603	683	4,529	7,274	9,523
ii) विदेश में भारतीय कंपनियों का परिचालन व्यय	1,757	3,736	2,125	2,439	1,670	1,493	4,455	2,486
iii) चार्टर किराया प्रभार	501	700	534	540	459	389	369	383
iv) आयातों पर भाड़ा @					3,924	6,659	6,076	
v) निर्यातों पर भाड़ा +					2,328	2,573	3,210	
vi) विदेश यात्रा बुक करने के लिए विप्रेषण #						114	53	25
ख. हवाई परिवहन								
i) भारत में परिचालित विदेशी कंपनियों द्वारा विप्रेषित अधिशेष	3,561	5,632	6,477	6,827	2,999	5,156	9,683	8,761
ii) विदेश में भारतीय कंपनियों का परिचालन व्यय	580	444	529	539	611	459	1,268	1,131
iii) चार्टर किराया प्रभार	324	336	333	391	280	217	626	1,143
iv) आयातों पर भाड़ा @					528	557	792	
v) निर्यातों पर भाड़ा +					264	180	144	
vi) विदेश यात्रा बुक करने के लिए विप्रेषण #						138	37	58
ग. आयातों पर भाडा@@	1,317	2,970	3,482	2,895	3,503			
घ. विदेश यात्रा बुक करने के लिए विप्रेषण @@	104	52	136	80	48			
ङ.अन्य	625	430	625	514	435	824	3,192	2,772
कुल (क से ङ)	**10,450**	**16,172**	**16,486**	**15,828**	**10,688**	**20,363**	**36,928**	**36,504**
3) बीमा खाता								
क. प्रीमियम								
i) जीवन	3	1	3	2	4	42	64	128
ii) जीवनेतर	45	37	123	22	47	1,511	1,076	372
iii) पुनर्बीमा	328	805	850	1,421	1,224	1,350	2,588	1,729
ख. व्यवसाय पर कमीशन	24	1	15	3	2	54	124	103
ग. अन्य	125	160	348	239	395	292	1,113	571
कुल (क से ग)	**525**	**1,004**	**1,339**	**1,687**	**1,672**	**3,249**	**4,965**	**2,903**
4) सरकार जिसे अन्यत्र शामिल नहीं किया गया								
क. विदेश में भारतीय दूतावासों और राजनयिक मिशनों का रखरखाव	1,023	1,199	1,002	938	855	1,516	1,971	1,284
ख. भारत में विदेशी दूतावासों और मिशनों का विप्रेषण	144	261	347	167	121	327	372	541
कुल (क से ख)	**1,167**	**1,460**	**1,349**	**1,105**	**976**	**1,843**	**2,343**	**1,825**

विवरण 6 : लेनदनों का श्रेणी-वार अदृश्य मद भुगतान *(जारी)*

(करोड़ रुपए में)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
5) विविध खाता								
क) संचार सेवाएं	826	583	1,767	4,704	3,547	3,298	1,285	2,980
ख) निर्माण सेवाएं	220	757	2,446	6,391	2,995	3,217	3,209	3,337
ग) वित्तीय सेवाए	5,785	8,991	6,046	6,765	3,217	3,735	4,265	9,352
घ) सॉफ्टवेअर सेवाएं	1,600	2,705	3,202	3,565	2,175	3,579	5,954	10,212
ङ) समाचार एजेंसी सेवाएं	693	1,167	777	1,122	1,080	1,251	576	983
च) रायल्टी, कॉपोराइट और लाइसेंस शुल्क	1,351	1,073	1,723	1,703	2,039	3,185	2,640	4,668
छ) व्यवसाय सेवाएं (1 से xii)	5,003	4,674	7,154	8,768	11,711	32,807	34,428	72,638
i) मर्चेंटिंग सेवाएं						1,055	547	1,009
ii) व्यापार संबंधी सेवाएं						4,741	5,352	7,461
iii) आपरेशन लीजिंग सेवाएं						1,584	2,052	3,908
iv) विधि सेवाएं						327	363	666
v) लेखांकन, लेखा परीक्षा सेवाएं						58	89	264
vi) कारोबार प्रबंधन तथा परामर्शी सेवाएं	3,456	2,499	2,537	3,135	3,734	5,708	10,769	22,747
vii) विज्ञापन / व्यापार मेला						2,298	1,860	7,751
viii) अनुसंधान और विकास सेवाएं						254	515	907
ix) वास्तुशास्त्रीय, इंजीनियरिंग एवं अन्य तकनीकी सेवाएं						4,987	6,293	16,509
x) कृषि, खनन तथा ऑनसाइट प्रोसेसिंग सेवाएं						30	67	335
xi) विदेश में कार्यालय सेवाओं का रखरखाव	1,547	2,175	4,617	5,633	7,977	11,746	6,480	11,054
xii) पर्यावरणीय सेवाएं						19	41	27
ज) वैयक्तिक, सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवाएं					461	371	525	
झ) धनवापसी / छूट	387	292	715	736	1,677	3,437	201	1,655
ञ) अन्य सेवाएं $$	13,192	15,031	8,510	14,246	18,483	20,884	26,460	22,456
कुल (क से ञ)	**29,057**	**35,273**	**32,340**	**48,000**	**46,924**	**75,854**	**79,389**	**128,806**

विवरण 6 : लेनदनों की श्रेणी-वार अदृश्य मदों का भुगतान *(समाप्त)*

(करोड़ रुपए में)

मदें	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 आं.सं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
ख) अंतरण	**150**	**981**	**1,729**	**3,886**	**2,633**	**4,066**	**4,134**	**6,423**
1) सरकारी अंतरण								
i) सरकारी क्षेत्र से प्राप्त अनुदान/दान	2	0	0	0	0	1,598	2,103	1,858
कुल	**2**	**0**	**0**	**0**	**0**	**1,598**	**2,103**	**1,858**
2) निजी अंतरण								
क) परिवार निर्वाह और बचत आदि के लिए अनिवासियों द्वारा विप्रेषण	125	581	1,392	3,668	2,387	1,887	1,569	3,717
b) धर्मार्थ/धार्मिक संस्थाओं को व्यक्तिगत उपहार दान	23	400	337	218	246	581	462	848
जिसमें से :								
i) वैयक्तिक उपहार और दान का विप्रेषण ++						488	426	713
ii) विदेश स्थित धर्मार्थ और धार्मिक संस्थानों को दान का विप्रेषण ++						75	32	79
iii) अन्य सरकारों और सरकार द्वारा निर्मित धर्मार्थ संस्थाओं को दान और अनुदान के प्रति विप्रेषण ++						18	4	56
कुल (क से ख)	**148**	**981**	**1,729**	**3,886**	**2,633**	**2,468**	**2,031**	**4,565**
आय	**23,804**	**35,008**	**36,148**	**33,739**	**38,617**	**43,013**	**54,542**	**71,778**
क) कर्मचारियों को वेतन								
i) भारत में कार्यरत अनिवासियों को मजदूरी/वेतन का भुगतान	57	2,123	2,318	2,892	4,031	6,066	3,430	4,295
कुल	**57**	**2,123**	**2,318**	**2,892**	**4,031**	**6,066**	**3,430**	**4,295**
ख) निवेश आय								
i) अनिवासी जमाराशियों पर ब्याज का भुगतान	7,549	8,276	8,621	6,845	7,536	6,071	6,634	8,923
ii) अनिवासियों से ऋणों पर ब्याज का भुगतान	13,167	13,401	13,599	12,565	15,920	11,001	19,215	15,818
iii) अनिवासी शेयर धारकों को लाभांश/ लाभ का भुगतान	2,333	4,676	3,397	2,237	4,041	8,969	11,123	15,770
जिसमें से :								
अनिवासी शेयर धारक को लाभांश का भुगतान ++						7,120	10,674	14,634
अनिवासी शेयर धारक को लाभ का भुगतान ++						1,849	449	1,136
iv) पुनर्निवेशित आय	0	6,177	7,841	8,866	6,710	8,555	12,219	23,028
v) डिबेंचरो, एफआरएन, सीपी, सावधि जमाराशियों सरकारी प्रतिभूतियों आदि पर ब्याज भुगतान	512	271	103	207	192	766	532	179
vi) एसडीआर पर प्रभार	132	73	248	96	73	86	75	135
vii) वोस्ट्रो खाते पर ओवरड्राफ्टो पर अदा किया गया ब्याज नोस्ट्रो खाते के ओडी पर ब्याज	2	2	2	22	92	1,154	945	2,986
ix) भारतीयों द्वारा करों का भुगतान/ अनिवासियों को सरकार द्वारा कर की धन- वापसी	52	9	19	9	22	345	369	644
कुल (i से ix)	**23,747**	**32,885**	**33,830**	**30,847**	**34,586**	**36,947**	**51,112**	**67,483**

आं.सं. : अंशत: संशोधित
@ : वर्ष 2004-05 से पूर्व अवधि के लिए समुद्री परिवहन एवं हवाई परिवहन के बीच 'आयात पर माल भाडे' के अलग अलग आंकड़े अलग से उपलब्ध नहीं हैं। अतएव. इन्हें 'आयात पर माल भाडा' शीर्ष (मद (2) (ग) के अंतर्गत शामिल किया गया है ।
\+ डेटा कवरेज को सुधारने के लिए 2004-05 में 'आयात पर माल भाडा' श्रेणी शुरू की गई थी ।
\# वर्ष 2004-05 से पूर्व अवधि के लिए समुद्री परिवहन एवं हवाई परिवहन के अलग-अलग आंकड़े अलग से उपलब्ध नहीं है । अतएव इन्हें 'विदेश यात्रा बुक करने के लिए विप्रेषण (मन के (2) (घ) के अंतर्गत शामिल किया गया है ।
@@ वर्ष 2004-05 से 'समुद्री परिवहन' तथा 'हवाई परिवहन' के शीर्ष के अंतर्गत अलग से प्रस्तुत किया गया ।
$ ऐसे लेनदेन का रिकार्ड रखने के लिए रिपोर्टिंग पद्धति बनाई गई अत: वर्ष 2004-05 से सेवाओं की नई श्रेणियां उपलब्ध हैं।
$$ वर्ष 2003-04 तक अन्य में विज्ञापन, किराया, कार्यालय रखरखाव, पुरस्कार, प्रदर्शनी शामिल है और अन्य सेवाएं अन्यत्र शामिल नही की गई हैं ।
++ अलग - अलग आंकड़े केवल 2004-05 से उपलब्ध है ।